



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

“

कांदा री तो वास धोयां मुधरी पड़े,
निरफल छैं अविनीत ने उपेश।

प्याज को धोने पर उसकी गंध
मंद हो जाती है पर अविनीत को
उपदेश देना निष्फल होता है।

- आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली

वर्ष 26 • अंक 13 • 30 दिसम्बर- 05 जनवरी, 2025



प्रत्येक सोमवार

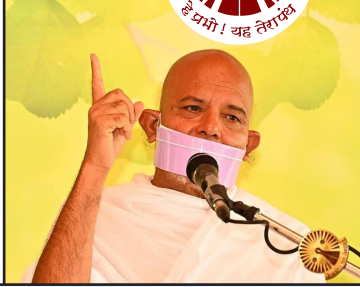
प्रकाशन तिथि : 28-12-2025 • पेज 12

₹ 10 रुपये



मोक्ष की दिशा में बढ़ने
के लिए परमार्थ का
जीवन जीएं : आचार्यश्री
महाश्रमण

पेज 11



सुनकर कल्याण को
ग्रहण करने का करें
प्रयास : आचार्यश्री
महाश्रमण

पेज 02

Address
Here

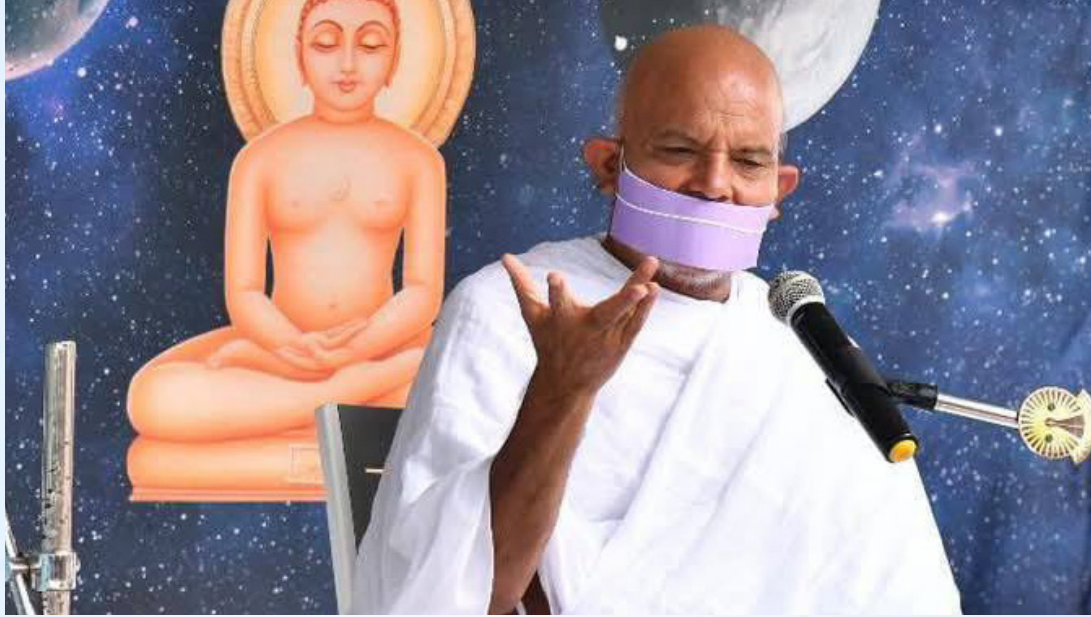
स्व-पर कल्याण में करें शक्ति का उपयोग : आचार्यश्री महाश्रमण

गलियाणा।

22 दिसम्बर, 2024

युगपुरुष आचार्यश्री महाश्रमणजी इन्द्राणज से लगभग चौदह किलोमीटर का विहार कर अपनी धवल सेना के साथ गलियाणा प्राथमिकशाला पधारे। जिनवाणी की अमृत वर्षा करते हुए महामनीषी ने फरमाया - हमारे जीवन में शक्ति का अत्यंत महत्व है। जिसके पास बल होता है, उसका प्रभाव अधिक होता है। संसार में अनेक प्रकार के बल विद्यमान हैं—तन बल, वचन बल, मन बल, जन बल, धन बल और आत्म बल। इनमें आत्म बल सबसे बड़ा बल है। इसके अतिरिक्त, बुद्धि बल भी महत्वपूर्ण है।

बुद्धि के बल पर आदमी बहुत बढिया कार्य भी कर सकता है तो उससे घटिया कार्य को भी कर सकता है। जिसके पास बुद्धि होती है, वह बौद्धिक बल का स्वामी होता है। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमें जो भी बल प्राप्त हो, उसका दुरुपयोग न हो। बल का



सदुपयोग करना चाहिए, ताकि वह लाभदायक हो। जो व्यक्ति शक्ति का दुरुपयोग करता है, उसकी शक्ति धीरे-धीरे समाप्त हो जाती है, और भविष्य में उसे शक्ति प्राप्त होना भी कठिन हो जाता है। उदाहरण के तौर पर, दुर्जन व्यक्ति के पास विद्या हो तो वह उसका दुरुपयोग कर सकता है, विवाद उत्पन्न

कर सकता है। इसके विपरीत, सज्जन व्यक्ति उसी विद्या का उपयोग ज्ञान के प्रसार और समस्याओं के समाधान के लिए करता है।

यदि दुर्जन व्यक्ति के पास धन हो तो वह धन का अहंकार करता है। जबकि सज्जन व्यक्ति अपने धन का उपयोग दान और परोपकार में करता

है। इसी प्रकार, दुर्जन व्यक्ति यदि शक्ति बल का स्वामी हो, तो वह दूसरों को कष्ट पहुंचाने का प्रयास करता है। वहीं, सज्जन व्यक्ति अपनी शक्ति का उपयोग दूसरों की सेवा और रक्षा के लिए करता है।

शक्ति का समुचित और अच्छे कार्यों में प्रयोग करने का प्रयास करना चाहिए।

शरीर में बल हो तो सेवा कार्य किया जा सकता है। किसी बीमार, असहाय की सहायता की जा सकती है। धन की शक्ति है तो उससे किसी का कल्याण हो सके, ऐसा प्रयास करना चाहिए। ज्ञान का अच्छा बल हो तो किसी दूसरे को ज्ञान प्रदान करने में सदुपयोग करना चाहिए। वचन का बल हो तो लोगों को अच्छा उद्बोधन, धर्म के प्रचार भी प्रदान किया जा सकता है। किसी को अच्छी सलाह भी दी जा सकती है। हालांकि सलाह भी सुपात्र को ही देनी चाहिए। शक्ति का प्रयोग स्वयं और दूसरों के कल्याण में करना चाहिए। विद्या संस्थानों का संचालन भी इसी भावना से होना चाहिए।

मोटेरा-कोटेश्वर ज्ञानशाला के बच्चों ने 'चरचा धारो रे' गीत का सुमधुर संगान किया। पूज्यवर ने उन्हें आशीर्चन प्रदान किया। आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में हांसी, अहमदाबाद और मध्यप्रदेश आदि क्षेत्रों से काफी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

चित्त की एकाग्रता, निर्विचारता और योग निरोध को प्राप्त करना है ध्यान का उद्देश्य : आचार्यश्री महाश्रमण



इन्द्राणज।

21 दिसम्बर, 2024

ध्यान योगी आचार्य श्री महाश्रमण जी 12 किमी का विहार कर स्थित सुमन जेठाभाई पटेल इंग्लिश मीडियम स्कूल, इन्द्राणज पधारे। अंतर्राष्ट्रीय ध्यान दिवस के अवसर पर मंगल देशना प्रदान करते हुए शांतिदूत ने फरमाया कि धर्मशास्त्रों में ध्यान और स्वाध्याय का वर्णन उपलब्ध है। ध्यान से संबोध (जागरण) की प्राप्ति संभव है। ध्यान हमारे मन और चित्त से जुड़ा हुआ एक तत्व है। यह शरीर और वाणी से भी संबद्ध हो सकता

है। वर्तमान में संसार में ध्यान और योग की व्यापक चर्चा होती है। योग में अष्टांग योग उपलब्ध है, जिसमें अहिंसा, शौच, संतोष आदि की बात कही गई है। आसन, प्राणायाम आदि का भी इसमें समावेश है।

अनेक प्रकार की ध्यान पद्धतियां प्रचलित हैं। हमारे यहां प्रेक्षाध्यान की पद्धति प्रचलित है, जिसे परम पूज्य आचार्य श्री तुलसी के समय में प्रारंभ किया गया था। यह पद्धति लगभग पचास वर्षों से जारी है। ध्यान का मूल उद्देश्य चित्त की एकाग्रता, निर्विचारता और योग निरोध को प्राप्त करना है। मन का

चंचल स्वभाव कैसे कम हो, चित्त कैसे स्थिर हो, और व्यक्ति राग-द्वेष से मुक्त होकर वीतरागता की ओर कैसे बढ़े— यह सब ध्यान के माध्यम से साधा जा सकता है। ध्यान के अभ्यास से सिद्धियां और लब्धियां प्राप्त हो सकती हैं।

ध्यान का अभ्यास करते समय ध्यान रखें कि सिद्धियों का दुरुपयोग न हो और अहंकार न आए। ध्यान के माध्यम से वीतरागता में प्रविष्ट होने की भूमिका तैयार करें। धर्म और अध्यात्म की साधना करें। तपस्या से प्राप्त लब्धियों का सदुपयोग करें।

(शेष पेज 10 पर)

सुनकर कल्याण को ग्रहण करने का करें प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

मानेज।

19 दिसम्बर, 2024

भिक्षु गणश्रेष्ठ आचार्यश्री महाश्रमण जी बोचासन से लगभग 11 किमी का विहार कर मानेज के मणि-लक्ष्मी तीर्थ पधारे। आर्हत वाणी का रसास्वादन कराते हुए महामनीषी ने फरमाया कि सुनना, बोलना, देखना, खाना-पीना, चलना-फिरना जैसे कार्य हमारे जीवन का हिस्सा हैं। हमारे पास कान और आंखें हैं, जो बाह्य ज्ञान प्राप्त करने के सक्षम माध्यम हैं।

मनुष्य सुनकर कल्याण को भी समझ सकता है और पाप को भी। तीर्थकरों की वाणी, आचार्यों और साधुओं के प्रवचन सुनकर व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करता है। धार्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए सुनना एक श्रेष्ठ माध्यम है। ग्रंथों का पठन भी ज्ञान प्राप्त करने का एक प्रभावी साधन है। जैन विश्व भारती में अनेक ग्रंथ उपलब्ध हैं।

यदि सिखाने वाला योग्य हो, तो जिज्ञासाओं का समाधान भी मिल सकता है। गुरु-ज्ञाता ज्ञान को स्पष्ट करते हैं। जब कान और आंख दोनों से ज्ञान ग्रहण



किया जाता है, तो बात स्पष्ट और पुष्ट हो जाती है। सुनने के बाद प्राप्त ज्ञान के आधार पर हेय और उपादेय का विवेक समझा जा सकता है। हेय को त्यागें और ग्रहण करने योग्य को अपनाएं। नौ तत्वों

में से संवर और निर्जरा उपादेय हैं। ज्ञान प्राप्त होने पर मनुष्य विवेकशील बन जाता है।

श्रमण की उपासना के दस लाभ बताए गए हैं, जिनमें पहला लाभ है—सुनने

का लाभ। सुनने से ज्ञान प्राप्त होता है, इसके बाद प्रत्याख्यान, संयम, अनाश्रव, तपस्या, और कर्मों की निर्जरा होती है। अक्रिया और योग-निरोध के माध्यम से मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। मूल से

आगे विकास संभव है। गुरु का मौन भी एक प्रकार का व्याख्यान बन जाता है। गुरु के आचरण और व्यवहार को देखकर भी बहुत कुछ सीखा जा सकता है। सुनाने वाला श्रुतसम्पन्न और अच्छा वक्ता होना चाहिए। श्रोता को भी सुनने की क्षमता रखनी चाहिए। वक्ता और श्रोता का आपसी संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण है। ज्ञान केवल साधुओं या गुरुओं से ही नहीं, बल्कि गृहस्थों से भी प्राप्त किया जा सकता है। जहां से भी अच्छा ज्ञान मिले, उसे ग्रहण करें। उदाहरण के लिए, कोई डॉक्टर चाहे किसी भी जाति का हो, यदि वह अच्छा विशेषज्ञ है, तो उसका इलाज बेहतर होता है। इसी प्रकार, यदि गुरु ज्ञानी हो, तो यह सोने पर सुहागा जैसी स्थिति होती है।

पूज्य आचार्य भिक्षु में ज्ञान की असीम गहराई थी। वक्ता, ज्ञाता और श्रोता तीनों का समन्वय ज्ञान की प्रक्रिया को सफल बनाता है। सुनकर कल्याण को ग्रहण करें और पाप को त्यागने का प्रयास करें।

मणि-लक्ष्मी तीर्थ के मैनेजर निकुंज भाई पटेल ने पूज्यवर के स्वागत में अपनी भावनाएं व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

साधना से प्राप्त हो सकता है भीतर छिपा सुख: आचार्यश्री महाश्रमण

तारापुर।

20 दिसम्बर, 2024

पौष कृष्ण पंचमी का पावन दिवस। गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी का 100वां दीक्षा दिवस। गुरुदेव तुलसी के परंपर पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमणजी का तारापुर सार्वजनिक हाईस्कूल पदार्पण हुआ। मंगल देशना प्रदान करते हुए पूज्यवर ने कहा कि जैन ग्रंथों में चौबीस तीर्थकरों का उल्लेख मिलता है। भरत क्षेत्र के इस अवसर्पिणी काल के प्रथम तीर्थकर भगवान ऋषभदेव थे और अंतिम चौबीसवें तीर्थकर भगवान महावीर स्वामी हुए।

जैन धर्म में मनुष्यों में सर्वोच्च स्थान तीर्थकरों का होता है। अध्यात्म के क्षेत्र में अधिकृत सत्य का उपदेश देने वाले ये परम पद पर स्थित हैं। सोलहवें तीर्थकर भगवान शान्तिनाथ, जो चक्रवर्ती सम्राट भी थे, तीर्थकर बनकर मोक्ष पथ पर अग्रसर हुए। शान्तिनाथ के नाम में निहित 'शान्ति' हमें सिखाती है कि हर व्यक्ति शान्ति और सुख का आकांक्षी है। सुख और सुविधा में मौलिक भिन्नता

है। पाप कर्मों की निर्जरा से जो परिणाम उभरता है, वही सुख है। सुख का स्रोत भीतर है, जबकि सुविधा का संबंध भौतिकता से है। सुख आध्यात्मिक मार्ग से प्राप्त होता है, जबकि सुविधा बाहरी साधनों से। अध्यात्म की साधना से पुण्य का बंधन होता है, और उससे सच्चे सुख की प्राप्ति होती है। साधनाशील साधुओं के पास भौतिक सुविधाएं नहीं होती, फिर भी वे सुख और शान्ति से जीवन व्यतीत करते हैं। इसके विपरीत, गृहस्थों के पास भौतिक वस्तुएं होती हैं, लेकिन उन्हें साधुओं जैसा सुख नहीं मिलता।

व्यक्ति का भय, क्रोध, और मोह जब क्षीण हो जाता है, तो भीतर का सुख प्रकट होता है। यह सुख हमारे भीतर एक खजाने की तरह है, जिसे पहचानने और निकालने का प्रयास होना चाहिए। सुख भीतर छिपा है, उसे खोजने और साधना करने से ही प्राप्त किया जा सकता है। साधना कठिन हो सकती है, लेकिन यह सुख का मार्ग है।

कठोर जीवन अपनाने से सुख की प्राप्ति संभव है। विद्यार्थियों को ज्ञान के



साथ अच्छे संस्कार भी मिलने चाहिए। जीवन में ईमानदारी आवश्यक है। झूठ से क्षणिक लाभ हो सकता है, लेकिन एक दिन झूठ का पर्दाफाश अवश्य होता है।

गणाधिपति आचार्यश्री तुलसी के सौवें दीक्षा दिवस के संदर्भ में आचार्य प्रवर ने कहा कि आज ही के दिन 99

वर्ष पूर्व पूज्य गुरुदेव तुलसी ने लाडून में अपने गुरु पूज्य कालूगणी से दीक्षा ग्रहण की थी। साधु बनकर संन्यास लेना सुख के मार्ग पर चलने जैसा है। गुरुदेव तुलसी ने असंख्य लोगों को दीक्षा देकर साधना का मार्ग दिखाया।

तारापुर नर्वणी मण्डल की ओर से भूपेन्द्रभाई पटेल व स्कूल के प्रिंसिपल

परेशभाई पटेल ने अपनी भावना व्यक्त की। आचार्य महाश्रमण चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति अहमदाबाद के अध्यक्ष अरविंद संचेती ने भी अपने उद्गार व्यक्त किए। अहमदाबाद समाज ने पूज्यवर की अभिवंदना में गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

मंगल भावना समारोह का आयोजन

परिवार प्रशिक्षण कार्यशाला

चिकमगलूर।

तेरापंथ धर्म संघ में वर्तमान अधिशास्ता द्वारा उद्घोषित चातुर्मासों की श्रृंखला में गत वर्ष सन् 2024 में मुनि मोहजीत कुमारजी आदि ठाणा-3 के चिकमगलूर में चातुर्मास के पूर्व एवं उत्तर प्रभाग में 171 दिनों के प्रवास के बाद चिकमगलूर प्रस्थान समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में श्रावक समाज को संबोधित करते हुए मुनि मोहजीत कुमारजी ने कहा- पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा निर्देशित कर्नाटक यात्रा के अन्तर्गत चिकमगलूर के चातुर्मास में संघीय, आध्यात्मिक आयोजनों के साथ त्याग, तपस्या, स्वाध्याय, ध्यान और प्रेरणा प्रवाह का उपक्रम व्यवस्थित चला।

चातुर्मास काल में निर्ग्रन्थ दर्शन कार्यशाला, भक्तामर कार्यशाला, कन्या-किशोर, महिला, तेयुप, टीपीएफ आदि कार्यशालाओं का सम्यक् क्रम चला। अनेक प्रकार के अनुष्ठानों, विविध आयामी संगोष्ठियां, ज्ञानशाला का रजत जयन्ती समारोह, दैनन्दिन उपक्रमों के प्रवाह आदि यथाक्रमों का नियोजन कालक्रम से योजित हुआ। तेरापंथ हस्तकला प्रदर्शनी

एवं विघ्नहर ह्रींकार अनुष्ठान का अभिक्रम कर्नाटक के इतिहास में प्रथम बार हुआ। चातुर्मास कालक्रम में श्रावक-श्राविकाओं, युवक-युवतियों, किशोरों-कन्याओं, सभा, तेयुप, महिला मण्डल, टीपीएफ और अणुव्रत समिति के कार्यकर्ताओं का उत्साह चातुर्मास को ऐतिहासिकता प्रदान कर रहा था। चिकमगलूर प्रस्थान समारोह में अपनी भावाभिव्यक्ति प्रकट करते हुए मुनि भव्य कुमारजी ने कहा- श्रावक समाज में सामाजिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियों के सम्यक नियोजन की उमंग दर्शनीय रही। इस चातुर्मास काल की ऐतिहासिकता में एक नया पृष्ठ जुड़ा। उस पृष्ठ में मुनि मोहजीत कुमार जी के संयम जीवन की पचास वर्षों की सम्पूर्णता पर संयम स्वर्ण जयन्ती का आयोजन अतुलनीय हुआ। गुरु दृष्टि एवं निर्देश के अनुसार कर्नाटक की यात्रा के प्रथम अवसर में प्रथम चातुर्मास गुरुकृपा से प्रभावी रहा। अब अग्रिम क्रम में भी त्याग, संयम, उपासना आदि में उत्साह प्रवर्धमान रहे।

मुनि जयेश कुमारजी ने कहा- चातुर्मास प्रवेश के बाद ज्ञान, दर्शन, चरित्र, तप, और पुरुषार्थ का दौर सघनता के साथ प्रारम्भ हुआ। इस काल में आध्यात्मिक

गतिविधियों के योग से समाज की अनेक इकाईयों में जिज्ञासा एवं जागरुकता का संचार हुआ। मुनिश्री ने विशेष प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा- हम केवल अतीत के गीत ही नहीं गाएँ, उससे प्रेरणा पाथेय लें तथा वर्तमान जीवन को सम्यक दिशा दें। जिसका वर्तमान सम्यक होगा उसका भविष्य भी उज्ज्वल होगा। इस चातुर्मास का प्रखर संदेश था- शुभ भविष्य है सामने। हमें भविष्य की शुभता के लिए वर्तमान को शुभ बनाना होगा। कर्नाटक राज्य की पर्वतीय श्रृंखला में सर्वोच्च शिखर माला मुलर्यंगिर पर मुनिवरों द्वारा शिखर आरोहण के साथ वहां पर सिद्ध शिखर अनुष्ठान का भव्य आयोजन भी अनूठे स्वरूप में मुखरित हुआ।

मंगलभावना समारोह तथा चिकमगलूर प्रस्थान समारोह में समाज की क्षेत्रीय इकाई संस्थाओं के प्रमुख पदाधिकारियों एवं सक्रिय कार्यकर्ताओं, सजग सेवा दायित्वों तथा नवोदित वक्ताओं ने अपने विचारों-भावों से गुरुवर तथा मुनिवरों के प्रति भाव अभ्यर्थना प्रकट की। चिकमगलूर अलविदा के समय सैकड़ों श्रद्धालुओं की उपस्थिति चातुर्मास की शिखर सफलता का दिग्दर्शन करवा रही थी।

शान्त सहवास के लिए अपने अंदाज से कुछ बातों को करें नजरअंदाज

कांटीवली।

तेरापंथ भवन चेम्बूर में आयोजित परिवार प्रशिक्षण कार्यशाला में उपस्थित श्रावक-श्राविका परिवार को संबोधित करते हुए साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा- जहां समूह होता है वहां कुछ नियम भी होते हैं। अनुशासन, मर्यादा और व्यवस्थाएं होती हैं। व्यक्ति परिवार की ईकाई है और परिवार समाज की ईकाई है।

समूह में रहने वाला व्यक्ति सुरक्षित रहता है। चारों ओर से सुरक्षित रहना ही परिवार की परिभाषा है। समूह में रहने वाला व्यक्ति चिन्तन करे कि उसके कारण बाधा उपस्थित न हो। समूह में रहने वाला यदि मनचाहा करने लगे तो वह आनन्द और सफलता प्राप्त नहीं कर सकता।

साध्वीश्री जी ने कार्यशाला में उपस्थित सभागियों को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा- परिवार का सबसे बड़ा धर्म है- सहिष्णुता। सहन करना सफलता का महान सूत्र है। हम मानते हैं जिन्दगी आसान नहीं है पर जीवन का महत्वपूर्ण सूत्र होना चाहिए - अपने अंदाज से कुछ बातों को नजरअंदाज करना सीखें। बहुत सारी बातें देखते हैं, कानों से सुनते हैं पर वक्त आने पर सब कहना उचित नहीं

है, आवश्यक नहीं है। साध्वीश्री जी ने कहा जिस प्रकार एक माली बगीचे की सुन्दरता के लिए कटाई, छंटाई करता रहता है, पौधे में खाद और पानी देता है वैसे ही हर अभिभावक अपनी भावी पीढ़ी को, नर्तकी पौध को उनके कर्तव्यों और दायित्वों के प्रति जागरुक करते रहें, संस्कारों से सिंचित करते रहें। साध्वीश्री जी ने कहा- आज स्थितियां बदल रही हैं। आवश्यकता है परिवार का हर सदस्य बड़े बुजुर्गों के अनुभव साझा करें, उनका सम्मान करें। वहीं बुजुर्गों का दायित्व है वे वात्सल्य भाव बनाए रखें। क्योंकि परिवार आग्रह से नहीं आदर से चलते हैं। दूसरों से बदलाव की अपेक्षा न करें, खुद का बदलाव अपेक्षित है। सहयोग, स्नेह और आनंद देना सीखें।

इससे पूर्व साध्वी अतुलयशा जी के मंगलाचरण से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। साध्वी डॉ. शौर्यप्रभा जी ने स्वस्थ परिवार के अनेक टिप्स बताए। साध्वी वृन्द ने 'परिवार उसी को कहते हैं, सौहार्द सुमन जहां खिलते हैं' गीत का संगान किया। साध्वी डॉ. चैतन्यप्रभा जी ने कुशल मंच संचालन किया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष रमेश धोका ने सम्पूर्ण परिषद की ओर से आभार प्रदर्शित किया एवं पुनः ऐसे आयोजन का निवेदन किया।

नवकार को समझने वाला हो सकता है भव पार

रायपुर। तेरापंथ अमोलक भवन, सदर बाजार में विराग मुनि जी आदि ठाणा के सान्निध्य में नवकार जाप ग्रुप व तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर के संयुक्त तत्वावधान में नवकार जाप का आयोजन किया गया। जाप के पश्चात विराग मुनि जी ने कहा कि जैन धर्म एक ऐसा धर्म है जहां व्यक्ति विशेष की पूजा आराधना

न हो कर गुणों की पूजा की जाती है। जैन धर्म की सभी परंपराओं में समान रूप से मान्य नवकार महामंत्र में भी गुणों की महिमा या आराधना की गई है। उन्होंने कहा कि नवकार मंत्र के जाप से हमें अनेक लाभ प्राप्त होते हैं। हमें उसके मर्म को समझना होगा जो उसके मर्म को समझ जायेगा वह भवसागर से तर जायेगा।

'मीट एंड ग्रीट: द हेल्थी वे' कार्यक्रम का आयोजन

गुरुग्राम।

ताऊ देवीलाल बायोडायवर्सिटी पार्क, गुरुग्राम में 'मीट एंड ग्रीट : द हेल्थी वे' कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत टीपीएफ गुरुग्राम के अध्यक्ष अरुण जैन द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई।

अध्यक्ष जैन ने आयोजन के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। सचिव मोहित जैन ने गुरुग्राम शाखा की गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया और सदस्यों को टीपीएफ के विभिन्न आयामों में सक्रिय योगदान देने के लिए प्रेरित किया। पूर्व अध्यक्ष अजय संचेती ने टीपीएफ के

उद्घोष 'इन्वॉल्व-यू मैटर' के महत्व पर चर्चा की। योग और ध्यान सत्र में योग विशेषज्ञ आकाश ने 30 मिनट तक शारीरिक व्यायाम और श्वास तकनीकों पर मार्गदर्शन दिया।

उपाध्यक्ष अनीता सेठिया ने 'फूड एडल्टरेशन : ए साइलेंट श्रेट टू हेल्थ' विषय पर रोजमर्रा के खाद्य पदार्थों की शुद्धता की पहचान करने के उपाय बताए।

उपाध्यक्ष विवेक जैन ने सभी का धन्यवाद करते हुए इस आयोजन को उपयोगी और प्रेरणादायक बताया। आयोजन के संयोजक और कार्यकारिणी सदस्य मनीष बैद ने प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

सामाजिक संदेशात्मक नाटिकाओं का मंचन

उदयपुर।

अशोक नगर के लोकाशाह स्थानक में तेरापंथ युवक परिषद् के सदस्यों ने दो सामाजिक समस्याओं पर आधारित नाटिकाओं का मंचन कर समाज को जागरूक करने का प्रयास किया।

पहली नाटिका रबच्चा डूब गया र मोबाइल की बढ़ती लत के दुष्परिणामों पर आधारित थी।

नाटिका में दिखाया गया कि एक मां मोबाइल की लत के कारण अपने घर और बच्चे की जिम्मेदारियों को अनदेखा करती है।

घर में बने स्विमिंग पूल के पास खेल रहे बच्चे पर ध्यान न देने के कारण उसकी जान चली जाती है। मां

का रुदन और यह त्रासदी दर्शकों को झकझोर कर मोबाइल के सही उपयोग और दुरुपयोग से बचने का संदेश देती है। इस नाटिका में प्रतीक जैन, कविता जैन, सीमा खमेसरा और सरिता बम्ब ने प्रभावशाली अभिनय किया।

दूसरी नाटिका रसूखा हैडपंपर पानी की बढ़ती कमी और उसके दुरुपयोग पर केंद्रित थी।

डॉक्टर पीसी जैन रजल मित्र द्वारा लिखित इस नाटिका में दिखाया गया कि अगर पानी का दुरुपयोग यूं ही जारी रहा, तो भविष्य में भूमि जल स्रोत सूख जाएंगे और हमारी आने वाली पीढ़ी पानी की एक-एक बूंद के लिए तरसेगी।

नाटिका ने दैनिक जल बचत और

रेन वाटर हार्वेस्टिंग के महत्व पर जोर दिया। इस नाटिका में भूपेश खमेसरा, प्रतीक जैन, कविता जैन, सीमा खमेसरा, राजू बम्ब, सरिता बम्ब, साजन मांडोट और चांदनी मांडोट ने भाग लिया।

कार्यक्रम के अंत में मुनि सुरेश कुमार जी ने दोनों नाटिकाओं की सराहना करते हुए कहा कि ये समस्याएं वर्तमान समय की सबसे बड़ी चुनौतियां हैं।

उन्होंने युवक परिषद से आग्रह किया कि वे मोबाइल और जल के दुरुपयोग को रोकने के लिए सतत प्रयास करते रहें और इस प्रकार के लघु नाटकों के माध्यम से समाज को जागरूक करते रहें।

संक्षिप्त खबर

गुरुदेव श्री तुलसी का
100वां दीक्षा दिवस

साउथ दिल्ली। 'शासनश्री' साध्वी संघमित्रा जी के सान्निध्य में साउथ दिल्ली समाज ने गणाधिपति गुरुदेव तुलसी का 100वां दीक्षा दिवस मनाया। मुख्य वक्ता के रूप में पधारे कल्याण परिषद् संयोजक के. सी. जैन ने गुरुदेव तुलसी की अभ्यर्थना में अपने विचार व्यक्त किये। दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने गुरुदेव तुलसी का स्मरण करते हुए उनके गुणों को याद किया। साध्वी वृंद ने भावपूर्ण गीतिका के माध्यम से अपनी भावांजलि दी और 'शासनश्री' साध्वी संघमित्रा जी ने गुरुदेव के उपकारों का स्मरण किया। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल साउथ दिल्ली की अध्यक्ष शिल्पा बैद ने किया।

प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन

कोपल। साध्वी सोमयशा जी के सान्निध्य में अमृत निवास में प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष के उपलक्ष में त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का प्रारम्भ महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेक्षाध्यान गीत से हुआ। साध्वी सोमयशा जी द्वारा 'ध्यान क्यों तथा कैसे' विषय पर विस्तृत जानकारी दी गई। साध्वी सरलयशाजी ने ध्यान का प्रयोग करवाया।

साध्वी ऋषिप्रभाजी ने भी अपने वक्तव्य द्वारा भाई बहनों को ध्यान करने की प्रेरणा दी। शिविर के अन्तिम दिन साध्वी ऋषिप्रभाजी ने हस्त मुद्राओं के प्रयोग बताए और उनसे होने वाले लाभ की भी जानकारी दी। शिविर में लगभग 30 भाई बहनों की उपस्थिति थी।

प्रेक्षा ध्यान कार्यशाला का आयोजन

नोखा। मुनि सुमति कुमार जी ठाणा 3 के सान्निध्य में प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन हुआ। मुनि सुमतिकुमार जी ने समझाया ध्यान का मतलब है अपने आप को देखना। जो अपने आप को देख सकता है वो ध्यान को देख सकता है। प्रेक्षा ध्यान से शान्ति एवं शक्ति संभव है। मुनि देवार्थकुमारजी ने कहा कि तपस्या के लिए ध्यान और ध्यान के लिए तपस्या करनी जरूरी है। मुनिश्री ने 15 मिनट का कायोत्सर्ग प्रयोग करवाया। सभा अध्यक्ष शुभकरण चौरडिया, कवि इन्द्रचन्द बैद, युवक परिषद अध्यक्ष निर्मल चोपड़ा, महिला मंडल अध्यक्ष सुमन मरोठी आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यशाला में मंडल की 80 संभागियों ने भाग लिया।

कैंसर जागरूकता अभियान
कार्यक्रम का आयोजन

टिटिलागढ़। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में कैंसर जागरूकता अभियान के अंतर्गत तेरापंथ महिला मंडल टिटिलागढ़ विभिन्न कार्यक्रम के माध्यम से कैंसर जागरूकता अभियान संचालित कर रही है। इसी कड़ी में स्थानीय क्षेत्र के म्युनिसिपालिटी की ममता देवी जैन को, संदीप चंद्राकर एवं खाद्य सामग्री बेचने वालों से मिलकर कैंसर जागरूकता पोस्टर देकर इस अभियान के बारे में अवगत करवाया गया। बहनों ने खाद्य विक्रेताओं को बताया कि न्यूज पेपर, एल्यूमिनियम फॉयल आदि में पैक किया हुआ खाना कैंसर जैसे घातक रोग को बढ़ावा देता है। सही विकल्प चुनने की सलाह के साथ उन्हें कैंसर के सूक्ष्म कारणों को मिटाने में योगदान का आह्वान किया। इसके साथ ही मंडल की बहनों ने रेलवे स्टेशन, कैफे, बैकरी आदि जगहों पर कैंसर जागरूकता पोस्टर लगाए।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन

रोहिणी, नई दिल्ली।

आचार्य महाश्रमण जी द्वारा घोषित प्रेक्षा ध्यान कल्याण वर्ष के अंतर्गत उत्तर दिल्ली महिला मंडल ने तेरापंथ भवन, रोहिणी में प्रेक्षा ध्यान कार्यशाला का आयोजन किया। यह कार्यशाला 'शासनश्री' मुनि विमल कुमार जी के सान्निध्य में संपन्न हुई।

कार्यक्रम की मंगल शुरुआत मुनि श्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के मंगल उच्चारण से हुई। मुनि श्री ने कार्यशाला की सराहना करते हुए प्रेक्षा ध्यान को एक कहानी के माध्यम से समझाया और कहा कि ध्यान के माध्यम से हर समस्या का समाधान संभव है।

मंडल की बहनों ने मंगलाचरण, प्रेरणा गीत और प्रेक्षा गीत की प्रस्तुति देकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। अध्यक्ष मधु सेठिया ने स्वागत भाषण में प्रेक्षा ध्यान को आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ की अनुपम देन बताते हुए सभी गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। अध्यात्म साधना केंद्र, महारौली से पधारे प्रेक्षा प्रशिक्षक विमल गुनेचा ने प्रेक्षा ध्यान का अर्थ, इतिहास और इसकी जीवनशैली पर विस्तृत प्रकाश डाला। उन्होंने दीर्घ श्वास प्रेक्षा, प्रेक्षाचर्या के सूत्रों, और ध्यान के माध्यम से आत्म-परिवर्तन की प्रक्रिया को विस्तार से समझाया। प्रशिक्षिका राज गुनेचा ने कायोत्सर्ग के महत्व को बताया और

प्रयोग कराया। अभातेमम की चीफ ट्रस्टी पुष्पा बैंगानी ने अपने वक्तव्य में कहा कि प्रेक्षा ध्यान आत्मज्ञान से जुड़ा है और ज्ञानदान को उत्तम दान बताते हुए धर्म की नींव मजबूत करने पर जोर दिया। रोहिणी सभा के अध्यक्ष विजय जैन ने महिला मंडल के कार्यों की सराहना करते हुए ऐसी कार्यशालाओं का आयोजन समय-समय पर करने की बात कही। कार्यशाला का संचालन मंत्री इंद्रा सुराणा ने व आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष सरोज छाजेड़ ने किया। कार्यशाला में 102 बहनों और 30 भाइयों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। मंडल की बहनों के अथक प्रयासों से यह कार्यशाला अत्यंत सफल रही।

विश्व ध्यान दिवस पर किया आत्म साक्षात्कार

अहमदाबाद।

तेरापंथ सेवा समाज और प्रेक्षा वाहिनी शाहीबाग, अहमदाबाद द्वारा विश्व ध्यान दिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुनि डॉ. मदनकुमार जी ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि प्रेक्षा ध्यान आत्म-साक्षात्कार का सशक्त माध्यम है। यह ज्ञाता-दृष्टा भाव का विकास करता है और मन की चंचलता को नियंत्रित करता है। उन्होंने कहा कि प्रेक्षा ध्यान, आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का विश्व शांति के लिए

एक महान योगदान है। मुनि मदनकुमार जी ने प्रेक्षा चर्या के सूत्र, जैसे वर्तमान में जीना, सतत अप्रमत्त रहना, प्रतिक्रिया विरति, मिताहार, और मितभाषण को जीवन में अपनाने का आह्वान किया। उन्होंने प्रेक्षा ध्यान के व्यावहारिक प्रयोग भी करवाए। मुनि सिद्धार्थकुमार जी ने कहा कि प्रेक्षा ध्यान के माध्यम से भीतर की अनंत शक्तियों को जानने का मार्ग प्रशस्त होता है। उन्होंने श्वास प्रेक्षा के महत्व पर जोर देते हुए बताया कि दीर्घ और मंद श्वास द्वारा व्यक्ति अपनी आंतरिक शक्तियों का रहस्य उजागर कर सकता है। प्रेक्षा प्रशिक्षक जवेरीलाल

संकलेचा ने प्रेक्षा ध्यान को जीवन की प्रयोगशाला बनाने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि प्रेक्षा ध्यान से आधि, व्याधि, और उपाधि को समाधि में परिवर्तित किया जा सकता है। कार्यक्रम में तेरापंथ सेवा समाज के प्रधान ट्रस्टी सज्जनराज सिंघवी ने स्वागत भाषण दिया। इस आयोजन की व्यवस्था में तेरापंथ सेवा समाज के अध्यक्ष नानालाल कोठारी, ट्रस्ट मंत्री दिनेश बालर और विमल बाफना का विशेष सहयोग रहा।

कार्यक्रम का कुशल संयोजन और आभार ज्ञापन प्रेक्षा वाहिनी के संवाहक जवेरीलाल संकलेचा ने किया।

टीपीएफ नेटवर्किंग इवेंट का सफल आयोजन

कांदिवली, मुंबई।

टीपीएफ कांदिवली द्वारा नेटवर्किंग इवेंट का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नवकार महामंत्र के पाठ से हुई। अध्यक्ष प्रशांत परमार ने अपने स्वागत भाषण में टीपीएफ के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने नए टैगलाइन Involve, You Matter के महत्व को भी समझाया और सदस्यों को आगामी विशेष आयोजनों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम के संयोजक हर्षल गेलड़ा ने कार्यक्रम के स्वरूप को संक्षेप में समझाया और एक-एक करके सदस्यों को आमंत्रित किया कि वे अपने पेशे के बारे में जानकारी साझा करें, और अपने संभावित योगदान एवं अन्य सदस्यों से

अपेक्षा के विषय में विचार व्यक्त करें। सदस्यों के परिचय के बाद एक रेफरल राउंड आयोजित किया गया ताकि सदस्य आपसी सहयोग के अवसर साझा कर सकें। डॉक्टर, इंजीनियर, वेल्थ मैनेजर, रिफर्बिंशड गैजेट सप्लायर, सिक्वोरिटी ट्रेडर, वास्तु कंसल्टेंट, रत्न और आभूषण निर्माता, यूनिफॉर्म सप्लायर, वकील, इन्वेस्टमेंट बैंकर, प्रैक्टिसिंग सीए और कॉर्पोरेट्स जैसे विभिन्न प्रोफेशनल्स इस कार्यक्रम में शामिल हुए।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र में सदस्यों ने बिजनेस रणनीति मॉडल का अनुभव किया जिसमें उन्हें एक टीम के रूप में काम करना था और कुछ समय के लिए एक व्यवसायी के जीवन का अनुभव करना था। कार्यक्रम में संरक्षक सदस्य चैनरूप दुग्गड़, आईसीएआई सेंट्रल

काउंसिल सदस्य पीयूष छाजेड़, उड़ान राष्ट्रीय संयोजक दीपक डागलिया, वरिष्ठ सदस्य शांतिलाल जैन और टीपीएफ ठाणे शाखा के अध्यक्ष अविनाश गोगड़ शामिल थे।

कार्यक्रम का समापन शाखा सचिव कमल धड़ेवा के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। कार्यक्रम की सफलता का श्रेय संयोजक टीम के निरंतर प्रयासों और मेहनत को जाता है। श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम के पश्चात सभी प्रतिभागियों ने साध्वी राकेशकुमारीजी और साध्वीवृंद के दर्शन किये। साध्वीश्री ने टीपीएफ द्वारा किए गए कार्यों की सराहना की और सभी टीम सदस्यों को धर्म-संघ के लिए इस कार्य को जारी रखने का आशीर्वाद प्रदान किया।

संक्षिप्त खबर

संतों का मंगल प्रवेश

इरोड। मुनि दीपकुमारजी का तेरापंथ भवन, इरोड में मंगल प्रवेश हुआ। मुनिश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के मंगल उच्चारण से समारोह का शुभारंभ किया गया। महिला मण्डल ने स्वागत गीत की प्रस्तुति दी। महासभा के उपाध्यक्ष नरेंद्रकुमार नखत, कार्यकारिणी सदस्य सुरेन्द्र भंडारी, सभा मंत्री दुलीचंद पारख, तेयुप अध्यक्ष महेन्द्र भंसाली ने भी स्वागत अभिनंदन के क्रम में अपने भावों की प्रस्तुति दी। मुनि दीपकुमारजी ने सहनशीलता का महत्त्व समझाते हुए कहा कि जो भी महापुरुष हुए हैं उन्होंने काफी कष्ट सहन किये हैं। मुनि काव्यकुमारजी ने भी अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। आभार एवं कुशल संचालन सभा के मंत्री दुलीचंद पारख ने किया। कार्यक्रम में श्रावक एवं श्राविका समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

सामाजिक सेवा कार्य का आयोजन

सुजानगढ़। अभातेममं द्वारा निर्देशित राष्ट्रीय समृद्धि योजना के अंतर्गत तेरापंथ महिला मंडल सुजानगढ़ द्वारा भोजलाई ग्राम में 50 कंबल जरूरतमंद भाई-बहनों को वितरित किए गए। महिला मंडल अध्यक्ष राजकुमारी भुतोडिया ने कैसर से बचने के उपाय की भी जानकारी दी। उन्हें न्यूज पेपर एवं फॉयल पेपर को खाने-पीने के समान में प्रयोग में नहीं करने की सलाह दी। तेयुप अध्यक्ष अंकित बागरेचा का भी सहयोग रहा।

गाँधीनगर, दिल्ली। नवगठित तेरापंथ किशोर मंडल गाँधीनगर दिल्ली की टीम द्वारा मानव कल्याण व असहाय लोगों के लिए सर्दी के मौसम में वस्त्र वितरण सेवा कार्य का आयोजन किया गया। 1008 गर्म कपड़े एकत्र कर असहाय लोगों को बाँटने का निर्धारित लक्ष्य पार कर लगभग 1321 कपड़ों को तेयुप व किशोर मंडल गाँधीनगर दिल्ली की टीम ने ब्लाईंड सेवा फाउंडेशन में दृष्टिहीन लोगों के बीच वितरित किया। इस अवसर पर तेयुप गाँधीनगर दिल्ली के अध्यक्ष अशोक सिंघी, पदाधिकारी, किशोर मंडल प्रभारी निशांत दुगड़, सहप्रभारी सौरभ सिंघी, सहसंयोजक मुदित पारख, युवा एवं किशोर साथियों के साथ श्रावक समाज की भी अच्छी उपस्थिति रही।

कन्या सुरक्षा सर्कल एवं बैंच हेतु भूमि पूजन

टिटिलागढ़। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में उड़ीसा का पहला आचार्य श्री महाश्रमण कन्या सुरक्षा सर्कल एवं आचार्य श्री महाश्रमण कन्या सुरक्षा बैंच का निर्माण होने जा रहा है। वरिष्ठ श्रावक एवं उपासक ओमप्रकाश जैन द्वारा जैन संस्कार विधि से तेरापंथ महिला मंडल टिटिलागढ़ की अध्यक्ष बाँबी जैन के हाथों मुन्डाबन्ध में भूमि पूजन करवाया गया। अध्यक्ष बाँबी जैन ने इस कार्यक्रम के लिए सभी बहनों के सहयोग एवं एकता के लिए धन्यवाद किया।

संस्कारशाला का आयोजन

कांटाबांजी। अभातेममं के निर्देशन में स्थानीय M.E. स्कूल में तेरापंथ महिला मंडल कांटाबांजी द्वारा छठी कार्यशाला 'सत्य और ईमानदारी' विषय पर आयोजित की गयी। लगभग 15 बच्चों ने उपरोक्त विषय पर अपना वक्तव्य रखा। कार्यक्रम में लगभग 38 बच्चे उपस्थित रहे।

❖ दुनिया में चार चीजें दुर्लभ मानी गई हैं- मनुष्यता, धर्मश्रवण, श्रद्धा और संयम में पराक्रम।

— आचार्य श्री महाश्रमण

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन



जैन विधि-अमूल्य निधि



नामकरण संस्कार

- **बेंगलुरु।** श्रीडूंगरगढ़ निवासी एवं बेंगलुरु प्रवासी खेमचंद सिंघी के पौत्र एवं नेहा-राकेश सिंघी के पुत्र का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक अमित भंडारी ने निर्दिष्ट मंत्रों का उच्चारण करते हुए संपादित करवाया।
- **बेंगलुरु।** कालू निवासी, बेंगलुरु प्रवासी हनुमान नाहटा के पौत्री एवं स्वीटी-अमित नाहटा के पुत्री के जन्म के उपलक्ष में नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से तेयुप बेंगलुरु से संस्कारक आदित्य मांडोत ने निर्दिष्ट मंत्रों का उच्चारण करते हुए संपादित करवाया। नवजात शिशु का नाम राधा रखा गया।

नूतन गृह प्रवेश

- **अमराईवाडी ओढव।** अहमदाबाद प्रवासी बसंत छाजेड़ के खोखरा परिष्कार स्थित नवीन गृह का शुभारम्भ जैन संस्कार विधि द्वारा सम्पादित हुआ। नमस्कार महामंत्र के सामूहिक स्मरण के साथ संस्कारक दिनेश टूकलिया एवं पंकज डांगी ने मंगल मंत्रोच्चार के साथ शुभारंभ संस्कार विधि परिसम्पन्न करवाई।
- **हैदराबाद।** मेड़ता रोड निवासी, हैदराबाद प्रवासी नितिन सुमन बोर्ड की सुपुत्री पूनम बोर्ड के नूतन गृह प्रवेश का मांगलिक कार्यक्रम संस्कारक ललित लुणीया ने सम्पूर्ण विधि विधान द्वारा संपादित करवाया।
- **अमराईवाडी ओढव।** अहमदाबाद प्रवासी दीपक सिंघवी के वस्त्राल स्थित नवीन मकान का शुभारम्भ जैन संस्कार विधि द्वारा सम्पादित हुआ। नमस्कार महामंत्र के सामूहिक स्मरण के साथ संस्कारक दिनेश टूकलिया एवं पंकज डांगी ने मंगल मंत्रोच्चार के साथ शुभारंभ संस्कार विधि परिसम्पन्न करवाई।
- **उदयपुर।** तेरापंथ युवक परिषद उदयपुर द्वारा फतेहलाल जैन के सुपुत्र राजेश निर्मल जैन की आइसक्रीम फैक्ट्री का उद्घाटन कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से आयोजित हुआ। संस्कारक पंकज भण्डारी, मनोज लोढ़ा द्वारा विभिन्न मंत्रोच्चार के साथ विधि सम्पादित की गयी।
- **पूर्वांचल कोलकाता।** कालू निवासी-पूर्वांचल कोलकाता प्रवासी राकेश कौशल सिंघी के नूतन गृह प्रवेश के मंगल कार्यक्रम संस्कारक विजय कुमार बरमेचा ने सम्पूर्ण विधि विधान द्वारा संपादित करवाया।

पाणिग्रहण संस्कार

- **उत्तर हावड़ा।** टमकोर निवासी उत्तर हावड़ा प्रवासी छगनलाल - भंवरी देवी चौरडिया की सुपौत्री एवं उम्मेद कुमार - सुमन चौरडिया की सुपुत्री ज्योति चौरडिया का शुभ विवाह कालू निवासी कूचबिहार प्रवासी स्व. शुभचंद - स्व. मख्बू देवी सिंघी के सुपौत्र एवं तेजकरण बबीता सिंघी के सुपुत्र प्रवीण सिंघी के संग जैन संस्कार विधि से संस्कारक प्रवीण कुमार सिंघी एवं संस्कारक बिरेंद्र बोहरा ने सम्पादित करवाया।
- **कोलकाता।** साल्टलेक-पूर्वांचल प्रवासी भंवरलाल दुगड़ के सुपुत्र रोहित दुगड़ का पाणिग्रहण संस्कार, बांकुड़ा प्रवासी स्व. शिवसाधन महंती की सुपुत्री नवनीता महंती के साथ जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक पुष्पराज सुराना, विजय कुमार बरमेचा एवं अनूप गंग ने मंगल मंत्रोच्चार एवं विधि विधान से सम्पन्न करवाया।

कन्याओं के लिए दो दिवसीय 'आरोहण' कार्यशाला

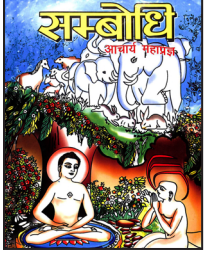
बोरावड।

साध्वी गुप्तिप्रभाजी के सान्निध्य तथा जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा बोरावड के तत्वावधान में वेदिका फार्म हाउस में द्विदिवसीय 'आरोहण' कार्यशाला का आयोजन कन्याओं के लिए किया गया। साध्वी श्री ने 'जागे कन्याओं का विवेक' विषय पर उद्बोधन देते हुए कहा - कन्या स्नेहशील, संवेदनशील, श्रमशील व दायित्वशील होती है, उनको किसी से कम न आंके। किंतु संस्कारों के बिना सफलता अधूरी है। पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित हुए बिना अपनी राह को प्रशस्त बनाने का प्रयास करना चाहिए। कार्यशाला के द्वितीय दिन साध्वीश्री ने

सफलता के पंच सूत्र - सहन करो, श्रम करो, संयम करो, सेवा करो व स्वस्थ रहो की विस्तृत व्याख्या की। साध्वी मौलिकयशाजी ने कहा- हम अपनों का सम्मान करना सीखें। 'Three magical words - Please, Sorry, Thank you' को अपने जीवन में अपनाकर आपसी सामन्जस्य को बढ़ा सकते हैं। 'कैसे हो लक्ष्य का निर्धारण' विषय पर प्रकाश डालते हुए साध्वी भावितयशाजी ने कहा- लक्ष्य निश्चित करने मात्र से प्राप्त नहीं होता, उसमें दृढ़ संकल्पशक्ति, एकाग्रता तथा समर्पण आदि उनके तत्वों की अपेक्षा होती है। मोटिवेशनल स्पीकर पिकी भंसाली ने Self Awareness, Self

Esteem आदि विषयों पर दोनों दिन प्रशिक्षण दिया। अंतिम सत्र में माता-पिता को बेटी के साथ आपसी रिश्ते को मजबूत बनाने हेतु प्रेरित किया गया। अंत में संभागीयों ने अपने-अपने अनुभवों को सभी के साथ साझा किया। संयम कर्णावट ने कैसर अवेयरनेस के संदर्भ में ब्रेस्ट और सर्वाइकल कैसर के बारे में विस्तार से समझाया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष नेमीचंद जैन, बालचंद बेताला, अध्यापिका इंदु कर्णावट, महिला मंडल अध्यक्ष हर्षा चौरडिया आदि ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी तथा पिकी भंसाली व संयम कर्णावट का अभिनंदन किया। कन्या मंडल संयोजिका प्रज्ञा लूणिया ने आभार व्यक्त किया।

संबोधि



गृहिधर्मचर्या



-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

२१. न पुरुषो न वापि स्त्री, नैवाप्यस्ति नपुंसकम्।
विचित्रपरिणामेन, देहेऽसौ परिवर्तते॥

आत्मा न पुरुष है, न स्त्री है और न नपुंसक। वह विचित्र परिणतियों द्वारा शरीर में परिवर्तित होता रहता है।

पुरुष, स्त्री आदि शब्दों का व्यवहार शरीर रचना सापेक्ष है। शरीर आत्मा नहीं है किंतु आत्मा का निवासस्थान है। आत्मा विभिन्न शरीरों को धारण कर तद्रूप बन जाती है। उसे अनेक संज्ञाएं मिल जाती हैं। लेकिन आत्मा इन सबसे पृथक् है। वह चिदानंद स्वरूप है।

२२. असवर्णः सवर्णो वा, नासौ क्वचन विद्यते।
अनन्तज्ञान-सम्पन्नः, संपर्येति शुभाशुभैः॥

आत्मा न सवर्ण है और न असवर्ण। वह स्वरूप की दृष्टि से अनन्तज्ञान से युक्त है। शुभ, अशुभ कर्मों के द्वारा बद्ध होने के कारण वह संसार में परिभ्रमण करता है।

वर्णसंकर-स्वर्णिक और स्पृश्य-अस्पृश्य की मान्यताएं तात्त्विक नहीं हैं। ये व्यवहार-भेद पर आश्रित हैं। आत्मा अनंत ज्ञानमय है। वह एक स्पृश्य में है, वैसे ही अस्पृश्य में है। मनुष्येतर प्राणियों में भी आत्मा के मूलरूप में कोई अंतर नहीं है। गीता कहती है- पंडित लोग सुशिक्षित और विनयशील ब्राह्मण, गाय, हाथी, कुत्ते या चांडाल को समान दृष्टि से देखते हैं।

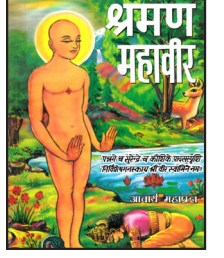
२३. गेहाद् गेहान्तरं यान्ति, मनुष्याः गेहवर्तिनः।
देहाद् देहान्तरं यान्ति, प्राणिनो देहवर्तिनः॥

घर में रहने वाले मनुष्य जैसे एक घर को छोड़कर दूसरे घर में जाते हैं उसी प्रकार शरीर में रहने वाली प्राणी एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर में जाते हैं।

शुद्ध आत्मा का संसरण नहीं होता। शरीरधारी आत्मा संसरण करती है। एक शरीर को छोड़कर अन्य शरीर धारण करने से आत्मा का स्वभाव परिवर्तन नहीं होता। यदि शरीर के साथ आत्मा का विनाश माना जाये तो उसका चैतन्य स्वरूप नहीं रह सकता।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

नारी का
बन्ध-विमोचन

वसुमती के स्वभाव और व्यवहार ने समूचे घर को मोहित कर लिया। उसने धनावह के घर में दासी के रूप में पैर रखा था, पर अपनी विशिष्टता के कारण वह पुत्री बन गई। शील की सुगंध और शीतलता ने उसे वसुमती से चंदना बना दिया।

चंदना का दिन-दिन निखरता सौंदर्य अन्य युवतियों के मन में ईर्ष्या भरने लगा। एक दिन मूला के मन में आशंका के बादल उमड़ आए। वह सोचने लगी, श्रेष्ठी चंदना के बारे में सही बात नहीं बता रहे हैं। वे इसके प्रति बहुत आकृष्ट हैं। कहीं धोखा न हो जाए? इसके साथ विवाह न कर लें? यदि कर लिया तो फिर मेरी क्या गति होगी? इन अर्थशून्य विकल्पों ने मूला को विक्षिप्त-जैसा बना दिया।

जिसे अपने-आप पर भरोसा नहीं होता, उसके लिए पग-पग पर विक्षेप की परिस्थिति निर्मित हो जाती है। मनुष्य अपनी शक्ति के सहारे जीना क्यों पसन्द नहीं करता? उसे अपनी ओर निहारना क्यों नहीं अच्छा लगता? दूसरों की ओर निहारकर क्या वह अपनी शक्ति को कुंठा की कारा में कैद नहीं कर देता? पर यह मानवीय दुर्बलता है। इस दुर्बलता से उबारने के लिए ही भगवान् महावीर ने आत्म-दीप की लौ जलाई थी।

मध्याह्न का सूर्य पूरी तीव्रता से तप रहा था। धरती का हर कोना प्रकाश की आभा से चमक उठा था। हर मनुष्य का शरीर प्रस्वेद की बूंदों से अभिषिक्त हो रहा था। उस समय धनावह बाजार से छुट्टी पाकर घर आया। नौकर सब चले गए थे। पैर धोने के लिए जल लाने वाला भी कोई नहीं था। पूरा घर खाली था। चंदना ने श्रेष्ठी को देखा। वह पानी लेकर पैर धुलाने आई। श्रेष्ठी ने उसे रोका। पर वह आग्रहपूर्वक श्रेष्ठी के पैर धोने लगी। उस समय उसकी केश-राशि विकीर्ण होकर भूमि को छूने लगी। उसे कीचड़ से बचाने के लिए श्रेष्ठी ने उसे अपने लीला-काष्ठ से उठा लिया और व्यवस्थित कर दिया। मूला वातायन में बैठी-बैठी यह सब देख रही थी। श्रेष्ठी के मन में कोई पाप नहीं था और चंदना का मन भी निष्पाप था। पाप भरा था मूला के मन में। वह जाग उठा।

धनावह विश्राम कर फिर बाजार में चला गया। मूला घर के भीतर आई। नौकर को भेजकर नाई को बुलाया। चंदना को सिर मुंडवा दिया। हाथ-पैरों में बेड़ियां डाल दीं। एक ओरों में बिठा, उसका दरवाजा बन्द कर ताला लगा दिया। दास-दासियों को कड़ा निर्देश दे दिया कि इस घटना के बारे में श्रेष्ठी को कोई कुछ भी न कहे और न चंदना की उपस्थिति का अता-पता बताए। यदि किसी ने इस निर्देश की अवहेलना की तो उसके प्राण सुरक्षित नहीं होंगे। इतना निर्देश दे वह मायके चली गई।

अपराह के भोजन का समय। श्रेष्ठी घर पर आया। भोजन के समय चंदना पास रहती थी। आज वह दिखाई नहीं दी। श्रेष्ठी ने पूछा, 'मूला कहां है? चंदना कहां है?' सबसे एक ही उत्तर मिला, सेठानी मायके गई हैं। चंदना का 'पता नहीं'।

श्रेष्ठी ने सोचा, 'चंदना कहीं क्रीड़ा कर रही होगी या प्रासाद के ऊपरी कक्ष में बैठी होगी।' श्रेष्ठी दुकान के कार्य से निवृत्त होकर रात को फिर घर आया। चंदना को वहां नहीं देखा। फिर पूछा और वही उत्तर मिला। श्रेष्ठी ने सोचा, जल्दी सो गई होगी।

दूसरे दिन भी उसे नहीं देखा। श्रेष्ठी ने उसी कल्पना से अपने मन का समाधान कर लिया। तीसरे दिन भी वह दिखाई नहीं दी। तब श्रेष्ठी गम्भीर हो गया। उसने दास-दासियों को एकत्र कर कहा, 'बताओ, चंदना कहां है?' वे सब दुविधा में पड़ गए। बताएं तो मौत और न बताएं तो मौत। एक ओर सेठानी का भय और दूसरी ओर श्रेष्ठी का भय। उन्हें सूझ नहीं रहा था कि वे क्या करें? एक बूढ़ी दासी ने साहस बटोरकर सबकी समस्या सुलझा दी। जो मृत्यु के भय को चीर देता है, वह अपनी ही नहीं, अनेकों की समस्या सुलझा देता है। उस स्थविरा दासी ने कहा, 'चंदना इस ओरों में बन्द है।' (क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साधवियां

आचार्य भिक्षु युग

साध्वीश्री कुशालांजी (पीपाड) दीक्षा क्रमांक 50

साध्वीश्री ने अपने 11 वर्ष के संयम पर्याय में संघ की बहुत प्रभावना की। अन्तिम चातुर्मास आचार्यश्री भारमलजी के सान्निध्य में किया। वहां उन्होंने संलेखना तप किया। चातुर्मास पूर्व आषाढ़ महीने में सिर्फ 9 पारणे किये, 20 दिन तपस्या में बीते। श्रावण मास में केवल 4, भाद्रव में 4, आश्विन में दो और कार्तिक में केवल तीन पारणे किये। इस तरह कार्तिक शुक्ला 7 तक 112 दिनों में केवल 13 दिन आहार किया। 199 दिन तपस्या में बीते। अन्त में पन्द्रह प्रहर के अनशन से समाधि मरण को प्राप्त किया।

- साभार: शासन समुद्र -

धर्म है उत्कृष्ट मंगल



-आचार्यश्री महाश्रमण
अदत्ताग्रहणम्
अस्तेयम्



कुछ दिन बीते। इन्द्रियविषयों की सुलभता। मनोज्ञ शब्द, मनोज्ञ रूप, मनोज्ञ रस आदि पांचों विषयों ने अपना प्रभाव डाला और उसकी कामवृत्ति जागृत हो गई। अब वह कोशा का सहवास पाने के लिए आतुर था। अवसर देखकर एक दिन अपनी भावना को कोशा के सामने रख दिया। कोशा तो पहले से ही संभली हुई थी। वह नहीं चाहती थी कि कोई मुनि उसके कारण संयम-भ्रष्ट बने। मुनि को सन्मार्ग पर लाने के लिए उसने एक उपाय सोचा। उसने मुनि से कहा यदि आप मुझे पाना चाहते हैं तो आपको मेरी एक शर्त पूरी करनी होगी। नेपाल से रत्न-कम्बल को लाना होगा। काम-भावना की अभीप्सा ने मुनि को नेपाल जाने के लिए विवश कर दिया। बरसात का मौसम। मार्गगत सैकड़ों कठिनाइयां और चतुर्मास के बीच विहार। जैसे-तैसे अनेक कष्टों को सहकर मुनि नेपाल पहुंचा और रत्न कम्बल लेकर पुनः आ गया। भीतर ही भीतर वह बड़ा प्रसन्न हो रहा था कि आज उसकी मनोभावना सफल होगी। मुनि ने रत्न कम्बल कोशा को दी। किन्तु कोशा ने मुनि के देखते-देखते कीचड़ से सने हुए पैरों को रत्न कम्बल से पोंछा और उसे नाली में फेक दिया। इस घटना को मुनि विस्फारित नेत्रों से देखता रह गया। उसके मन पर एक गहरी प्रतिक्रिया हुई कि कितने कष्टों को सहकर मैं इसे यहां लाया और उसका यह दुरुपयोग! बात कुछ समझ में नहीं आई। अन्त में उसने कोशा से पूछ ही लिया भद्रे! तुमने यह क्या किया? इस बहुमूल्य कम्बल का क्या यही उपयोग था? कोशा ने व्यंग्य को भाषा में कहा-संयम रत्न से बढ़कर रत्नकम्बल कौन-सी अमूल्य वस्तु है? आपने तो तुच्छ कामभोगों के लिए संयमरत्न जैसी अनमोल वस्तु को भी छोड़ दिया। फिर रत्नकम्बल है ही क्या? कोशा के इन वाक्यों ने मुनि के अन्तःकरण को बीध दिया। पुनः वह संयम में स्थिर हो गया। उसे आचार्य के 'महादुष्कर' कथन की स्मृति हो आई जिसके कारण उसने यह प्रपंच रचा था। अन्त में वह आचार्य के पास आया और कृत दोष की आलोचना कर के शुद्ध हो गया।

अब्रह्मचर्य तीन प्रकार का होता है-१. दिव्य-देवता संबंधी २. मानुषिक-मनुष्य संबंधी ३. तिर्यग्यौनिक पशु-पक्षी संबंधी। इस त्रिविध मैथुन सेवन का तीन करण और तीन योग से यावज्जीवनार्थ परित्याग करने पर ब्रह्मचर्य के ३ x ३ x ३ = २७ भंग बन जाते हैं।

ब्रह्मचर्य का अर्थ केवल वस्ति-नियमन ही नहीं, केवल दैहिक भोग से विरमण ही नहीं, उसकी पूर्णता ब्रह्म-आत्मा में रमण करने से होती है। इस साधना के लिए मन पर नियंत्रण और भावों का परिष्कार अपेक्षित होता है। जिसने यह साधना सिद्ध कर ली, वह उत्तम तपस्वी है। प्रतिकूल स्थितियों को सहना अपेक्षाकृत सरल है किन्तु मनोनुकूल स्थितियों में मन का संयम रखना कठिन होता है। अब्रह्मचर्य से शक्तिक्षय और ब्रह्मचर्य से शक्तिसंचय होता है, शक्ति की रक्षा होती है। अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के कार्यों में वीर्यवत्ता आवश्यक होती है और ब्रह्मचर्य से वह सुचारु रूप से प्राप्त होती है। इसलिए ब्रह्मचर्य को उत्तम तप की संज्ञा देना सार्थक प्रतीत होता है।

ममत्व-विसर्जनम् अपरिग्रहः

३१ जुलाई १९९०। रात्रिकालीन प्रवचन का विषय था- 'जीविका और जीवन'। युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ एवं आचार्यश्री तुलसी के प्रवचन को सुनकर एक दिग्गम्बर भाई आया और बोला-महाराजजी! मैंने आपका प्रवचन सुना। प्रवचन सुनने पर मुझे जापान की एक घटना याद आ गई। वह घटना इस प्रकार है- सन् १९३६ की बात है। जापान के एक शहर में एक साइकिल का कारखाना था। कारखाने के मालिक ने ७ भारतीय व्यक्तियों को भोजन के लिए निमंत्रित किया। भोजन के समय मिलमालिक एवं भारतीयों के बीच अनौपचारिक वार्तालाप शुरू हो गया।

भारतीय- आपका इस कारखाने में कितना पैसा लगा है?

मिलमालिक- इसमें तीन लाख येन (जापान का सिक्का) लगे हैं।

भारतीय- इस कारखाने से कितनी आमदनी प्राप्त होती है?

मिलमालिक- साठ येन प्रतिमाह की आमदनी है।

भारतीय- अगर इतना पेसा आप बैंक में जमा कर दें तो आपकी आमदनी कितनी बढ़ सकती है।

मिलमालिक- अरे भारतवासियो! आप ऐसा सोचते हैं इसीलिए गुलाम हैं। अगर मुझे तीन हजार येन की आमदनी प्राप्त हो तो भी मैं अभी जो जिन्दगी गुजार रहा हूँ, इससे ज्यादा अच्छी जिन्दगी नहीं गुजार सकता। सुनिए, साठ येन में से तीस येन मैं सरकार को चन्दे में देता हूँ। तीस येन बचते हैं। आपको मालूम होना चाहिए यहां एक मजदूर की मजदूरी प्रतिदिन आधा येन है। आधा येन में हमारा मजदूर खुशहाल है। मैं कितना खुशहाल हूँ कि मुझे प्रतिदिन एक येन की प्राप्ति होती है। (क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र



तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर
कोड स्कैन करें या आवेदन करें
<https://abtyp.org/prakashan>

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyppt@gmail.com ई-मेल या 8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

जनवरी 2025

सप्ताह के विशेष दिन

8 जनवरी

भगवान शांतिनाथ
केवलज्ञान
कल्याणक

10 जनवरी

भगवान अजितनाथ
केवलज्ञान एवं
भगवान मल्लिनाथ
दीक्षा कल्याणक

12 जनवरी

भगवान अभिनन्दन
केवलज्ञान
कल्याणक

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्य श्री जीतमलजी युग

मुनिश्री गणेशीलालजी (सूरवाल) दीक्षा क्रमांक 220

मुनिश्री बड़े उग्र तपस्वी थे। आपकी तप की तालिका इस प्रकार है-
उपवास/670, 2/247, 3/80 4/102, 5/85, 6/5, 7/6, 8/4,
10/3, 11/3, 12/2, 13/1, 14/1, 15/1, 16/1, 17/1, 18/1,
19/1, 20/1, 22/1 तप के कुल दिन 2564 होते हैं, जिसके 7 वर्ष 1
महिना और 24 दिन हुए।

- साभार: शासन समुद्र -

रक्तदान शिविरों के विभिन्न आयोजन

दक्षिण मुंबई। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा निर्देशित MBDD-RHYTHM 2024 के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद् दक्षिण मुंबई द्वारा चर्चगेट रेलवे स्टेशन पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें कुल 62 यूनिट ब्लड का संग्रहण हुआ। दक्षिण मुंबई तेरापंथ सभा, परिषद् एवं किशोर मंडल सदस्यों के साथ सभी का सहयोग रहा। अभातेयुप से मुंबई MBDD-RHYTHM के संयोजक अमित रांका, संयोजक एवं शाखा प्रभारी कमलेश भंसाली, रवि डोशी, ब्लड कैम्प प्रायोजक राजेन्द्रजी बैद, तेरापंथ सभा दक्षिण मुंबई अध्यक्ष सुरेश डागलिया, महिला मंडल मंत्री संगीता राठौड़ एवं पश्चिम रेलवे डिप्टी चीफ इंजीनियर हरीश मीणा एवं डिप्टी चीफ अफसर लीलम्मा अल्पोंसो की विशेष उपस्थिति रही। रक्त संग्रहण में जी. टी. अस्पताल ब्लड बैंक का पूर्ण सहयोग रहा।

गोरेगांव, मुंबई। अभातेयुप निर्देशित MBDD-RHYTHM 2024 के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद गोरेगांव द्वारा रेलवे स्टेशन के प्रांगण में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जैन संस्कारक सुरेश ओस्तवाल एवं सभा अध्यक्ष अशोक चौधरी ने जैन संस्कार विधि द्वारा विधिवत ब्लड कैम्प का शुभारंभ किया। तेयुप अध्यक्ष सुमित चोरडिया ने सभी पदाधिकारियों एवं समाज का स्वागत अभिनन्दन किया। इस अवसर पर तेरापंथ सभा, तेयुप, किशोर मंडल संयोजक अवि धाकड़, महिला मंडल अध्यक्ष प्रतिमा सांखला आदि की विशेष रूप से उपस्थिति रही। कुल 50 ब्लड यूनिट का संग्रह किया गया। शिविर के सफल आयोजन में भरूलाल, चतरलाल, गोपाल सिंघवी परिवार का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री हितेश राठौड़ ने किया।

अहमदाबाद। अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद्- अहमदाबाद एवं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ प्रेरित संस्कृति संवर्धन ट्रस्ट द्वारा "मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव" (MBDD) का आयोजन किया गया। कैम्प में सिविल तथा कैंसर हॉस्पिटल की ब्लड बैंक के सहयोग से 78 यूनिट का कलेक्शन किया गया।

बेहाला। तेयुप बेहाला एवं जैन अपार्टमेंट ओनर्स एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में रक्तदान शिविर का आयोजन हुआ। कोठारी मेडिकल सेंटर की ब्लड बैंक के सहयोग से कुल 38 यूनिट रक्त संग्रह किया। चेतन चोपड़ा का इस शिविर में सराहनीय योगदान रहा।

इचलकरंजी। तेरापंथ युवक परिषद इचलकरंजी द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत महामंत्र के मंगलाचरण से शुरुआत हुई। शिविर में स्थानीय सभा अध्यक्ष अशोक बाफना की विशेष उपस्थिति रही। आचार्य तुलसी ब्लड बैंक के सहयोग से कुल 28 यूनिट रक्त संग्रह किया गया। तेयुप अध्यक्ष अनिल छाजेड़, संयोजक अक्षय खींसरा और युवा सदस्यों के सहयोग से शिविर संपन्न हुआ। मंत्री अंकुश बाफना ने आभार व्यक्त किया।

पालघर। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में MBDD RHYTHM के तहत तेरापंथ युवक परिषद पालघर और जैन युवा ग्रुप पालघर के सह आयोजन में तेरापंथ भवन, पालघर में रक्तदान शिविर का आयोजन महाराष्ट्र ब्लड बैंक के सहयोग से किया। रक्तदान शिविर की शुरुआत देवीलाल सिंघवी ने नमस्कार महामंत्र और हेतल बाफना द्वारा मंगलाचरण से हुई। तेयुप टीम और जैन युवा ग्रुप पालघर के प्रयासों से कुल 102 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। रक्तदान शिविर में पालघर तेयुप प्रभारी मनीष रांका, किशोर मंडल ब्लू ब्रिगेड मेम्बर ऋषभ मेहता एवं पुलकित कोठारी की विशेष उपस्थिति रही।

गुरु दर्शनार्थ संघ यात्रा का आयोजन

विजयनगर।

साध्वी सिद्धप्रभा जी की प्रेरणा से तेरापंथ युवक परिषद् विजयनगर के 54 सदस्यीय गुरु दर्शनार्थ संघ ने युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के गुजरात के भरूच में दर्शन कर सेवा का लाभ लिया।

भरूच से लवारा तक पूज्य प्रवर की विहार सेवा की। गुरुदेव की दोपहर की सेवा में अभातेयुप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री अमित सेठिया की उपस्थिति रही। संघ सदस्यों ने आचार्य प्रवर, साध्वी

प्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी, मुख्य मुनि श्री महावीर कुमार जी, साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशाजी, मुनि दिनेश कुमारजी, तेयुप के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेश कुमार जी एवं अन्य चारित्र आत्माओं के दर्शन सेवा कर प्रेरणा पाथेय प्राप्त किया।

इस अवसर पर विजय स्वर संगम टीम ने गीतिका के माध्यम से गुरुदेव के समक्ष 'आशीष दिराए सर हाथ रखाये' गीत की प्रस्तुति की। अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा ने अपनी एवं परिषद की भावना गुरुदेव की समक्ष निवेदित

की। संयोजक राकेश पोखरणा ने भावाभिव्यक्ति दी।

गुरुदेव के सान्निध्य में सहयोग प्रदाता परिवार मनोहर लाल, राकेश, मुकेश, बाबेल परिवार का सम्मान किया गया।

संघ यात्रा टीम में श्रेयांस गोलछा, उत्तम बागरेचा, देवांग बैद एवं सदस्यों का अथक श्रम लगा। परिषद् के पूर्व अध्यक्ष, परामर्शक, पदाधिकारी, आयाम सलाहकार एवं सदस्यों की सहभागिता रही। तेयुप मंत्री संजय भटेवरा ने कुशल संचालन किया।

परिवार प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

इरोड।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि दीपकुमारजी ने नमस्कार महामंत्र के मंगल उच्चारण एवं भगवान महावीर स्वामी की स्तुति के साथ 'रिश्तों की डोर - न हो कमजोर : परिवार प्रशिक्षण कार्यशाला'

का प्रारम्भ स्थानीय तेरापंथ भवन में किया। परिवार को स्वर्ग से सुंदर बनाने की प्रेरणा देते हुए मुनि श्री ने कहा - प्रेम है तो परिवार है। परिवार के सभी सदस्यों को अपनी जिम्मेदारी निभानी चाहिए। एक दूसरे का हाथ बढ़ाने से परिवार में शान्ति बनी रहती है। माता-पिता की सेवा कर उन्हें चित्त समाधि

पहुँचाने का प्रयास करें। परिवार के विभिन्न रिश्तों को मजबूती प्रदान करें। रहना सीखें, सहना सीखें और मौके पर कहना सीखें, तभी परिवार खुशहाल होगा। मुनि काव्यकुमारजी ने अहंकार विषय पर अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। श्रावक एवं श्राविका समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

'द डिवाइन पाथ ऑफ लाइफ' श्रृंखला का संचालन

गुरुग्राम। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा आयोजित आध्यात्मिक श्रृंखला 'द डिवाइन पाथ ऑफ लाइफ' के तहत दूसरा अध्याय 'सम्यक दर्शन' संपन्न हुआ।

इस ऑनलाइन आयोजन में लगभग 60 प्रतिभागियों ने भाग लिया। पहले अध्याय में 100 से अधिक प्रतिभागियों ने सहभागिता रही।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए टीपीएफ गुरुग्राम के सचिव मोहित

जैन ने श्रृंखला के उद्देश्यों का परिचय दिया। संयुक्त सचिव ऋषभ संचेती ने नमस्कार महामंत्र का उच्चारण कर मंगलाचरण किया। अध्यक्ष अरुण जैन ने स्वागत भाषण दिया, और राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत जैन ने इस पहल की सराहना की।

मुख्य वक्ता संस्कृति भंडारी ने 'सम्यक दर्शन' को सरल कहानियों और प्रेरणादायक उदाहरणों के माध्यम से प्रभावशाली ढंग से समझाया।

प्रतिभागियों के सवाल के जवाब देते हुए, उन्होंने दर्शन और उसकी प्राथमिकता पर विस्तृत प्रकाश डाला।

राष्ट्रीय संबोध कार्यशाला संयोजिका हेमा चोरडिया ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में टीपीएफ राष्ट्रीय व क्षेत्रीय टीम, पूर्व अध्यक्ष, महिला मंडल, युवक परिषद, और अन्य जैन व अजैन प्रतिभागियों ने भाग लिया।

अंत में अरुण जैन ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

संस्कार शाला का आठवाँ चरण आयोजित

राजराजेश्वरी नगर।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल, राजराजेश्वरी नगर द्वारा समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत संस्कार शाला का आठवाँ चरण, अध्यक्ष सुमन पटवारी के निर्देशानुसार, सरकारी स्कूल मैलासंड्रा में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत आशा लोढ़ा ने "नमस्कार महामंत्र" और "महाप्राण

ध्वनि" से की।

कार्यशाला के विषय "सोशल मीडिया का सही उपयोग" पर उपाध्यक्ष मधु कटारिया ने बच्चों को सोशल मीडिया के लाभ और चुनौतियों के बारे में जागरूक किया गया।

उन्हें सोशल मीडिया का ज्ञान प्राप्ति, शिक्षा और सकारात्मक संचार के लिए उपयोग करने की सलाह दी गई, साथ ही फेक न्यूज, साइबर बुलिंग और गोपनीयता के खतरों से बचने के

लिए सतर्क रहने की प्रेरणा दी गई। कार्यक्रम का समापन "Positive Affirmation" के साथ हुआ, जिसमें बच्चों को जीवन में अनुशासन, आदर और सकारात्मक सोच के महत्व को समझाया गया।

कार्यशाला में मंत्री पदमा महेर एवं प्रचार प्रसार मंत्री पूनम दक उपस्थित थीं।

इस अवसर पर मंडल द्वारा विद्यालय में प्रिंटर भेंट किया गया।

संस्कारों और संस्कृति को जीवन व्यवहार में अपनाएं

रेलमगरा।

मुनि संजय कुमार जी के सान्निध्य में 'धर्म व्यवहार में कैसे लाएं?' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुनि प्रसन्नकुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि शताब्दियों से समाज और परिवारों में आत्म-धर्म का जीवन व्यवहार में समावेश होता रहा है। इससे संस्कारों का निर्माण हुआ है, और आपसी रिश्तों में मिठास, सौहार्द, प्रेम व भाईचारा बना रहा है। उन्होंने कहा कि दिखावे के

कारण रिश्तों में मिठास की जगह खटास बढ़ रही है। बड़े-बुजुर्गों के प्रति आदर, सम्मान और विनय का व्यवहार आत्म-धर्म ही सिखाता है।

महिलाओं को परिवार और समाज की संस्कृति के साथ-साथ लज्जा और दया का पाठ आत्म-धर्म के माध्यम से ही मिलता है। वर्तमान समय में हमारी पवित्र संस्कृति और संस्कारों में विरोधाभास देखा जा रहा है। परिवार और समाज में आपसी असंतोष बढ़ता जा रहा है। 'हम दो, हमारे एक' की विचारधारा के बावजूद

आपसी सामंजस्य और प्रेम में कमी देखने को मिल रही है। दूसरी ओर, शिक्षा का स्तर भले ही बढ़ा हो, लेकिन अपनों के व्यवहार से उत्पन्न असंतोष और दूरियां समाज में बढ़ रही हैं। इस टूटन और असंतोष के कारण धार्मिक संस्कार धीरे-धीरे परिवार और समाज से पलायन कर रहे हैं। मुनिश्री ने कहा कि यदि शांति और सौहार्द के साथ परिवार और समाज में जीवन व्यतीत करना है, तो संस्कारों और संस्कृति को जीवन व व्यवहार में अपनाना होगा।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन

राजराजेश्वरी नगर, बैंगलोर।

अभातेमम के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल आर.आर. नगर द्वारा अमर कुंज में साध्वी उदितयशा जी ठाणा 4 के सान्निध्य में प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। मंडल की अध्यक्ष सुमन पटावरी ने सभी का स्वागत और अभिनंदन किया। मंडल की बहनों द्वारा प्रेक्षा ध्यान और स्वागत गीत प्रस्तुत किए गए।

साध्वी उदितयशाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि ध्यान के माध्यम से हमें आत्मिक रूप से गहराई प्राप्त करनी चाहिए। ध्यान के लिए चार आवश्यक सामग्रियों का उपयोग बताया गया है - आसक्ति का त्याग, कषायों का निग्रह, संकल्प ग्रहण और मन व इंद्रियों पर विजय।

साध्वी संगीतप्रभाजी ने प्रेक्षा ध्यान के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इस वर्ष को 'प्रेक्षा ध्यान कल्याण वर्ष' घोषित किया गया है। प्रेक्षाध्यान से तनावमुक्त जीवन और सहनशक्ति

का विकास होता है। उन्होंने सभी को इसे जीवन में अपनाने का सुझाव दिया। साध्वी भव्ययशा जी ने प्रतिभागियों को त्राटक का अभ्यास कराया, जबकि साध्वी शिक्षाप्रभा जी ने कायोत्सर्ग का अभ्यास करवाया।

कार्यशाला में पूर्व अध्यक्ष कंचन छाजेड़, सरोज आर. बैद, लता बाफना, उपाध्यक्ष मधु कटारिया, और संरक्षिका गुलाब छाजेड़ सहित लगभग 80 बहनें उपस्थित थीं। कार्यक्रम का कुशल संचालन और आभार प्रकट मंडल की मंत्री पदमा महेर ने किया।

वास्तु शास्त्र और टीपीएफ कनेक्ट का आयोजन

दिल्ली।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, दिल्ली की ओर से अणुव्रत भवन में साध्वी डॉ कुंदन रेखा जी के सान्निध्य में 'वास्तु शास्त्र' और 'टीपीएफ कनेक्ट' का आयोजन हुआ।

इस दौरान वास्तु विशेषज्ञ उम्मेद सिंह दुगड़ द्वारा वास्तु शास्त्र, स्वर विज्ञान और हस्त मुद्रा के बारे में लोगों

को जानकारी दी। कार्यक्रम के दौरान वास्तु विद् दुगड़ ने वास्तु के कई रहस्यों के बारे में लोगों को जानकारी दी। टीपीएफ दिल्ली अध्यक्ष कविता बरडिया ने अपने विचार व्यक्त किए।

टीपीएफ नॉर्थ जोन अध्यक्ष राजेश कुमार जैन, तेरापंथ सभा, दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने सबका मार्गदर्शन किया। टीपीएफ गौरव संपत नाहटा, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य

नवनीत दुगड़, अंकित श्यामसुखा, श्रेणिक जैन की विशेष उपस्थिति के साथ प्रोफेशनल्स, विभिन्न सभाओं, महिला मंडल एवं तेयुप सदस्यों की भी उपस्थिति रही।

आभार ज्ञापन गौतम डुंगरवाल ने तथा संचालन टीपीएफ दिल्ली के सचिव हिमांशु कोठारी ने किया। अणुव्रत भवन के परिसर में हुए इस कार्यक्रम में करीब 150 लोगों की सहभागिता रही।

3 V पर महत्वपूर्ण कार्यशाला का आयोजन

रायपुर।

मुनि सुधाकर कुमार जी के सान्निध्य में 3 V पर महत्वपूर्ण कार्यशाला का आयोजन ग्रामीण क्षेत्र अगरी कला में विद्यालय परिवार के विशेष आग्रह पर विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समक्ष किया गया। कार्यशाला में

विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए मुनिश्री कहा कि हमारे जीवन में 3 V महत्वपूर्ण हैं व उनका अत्यधिक प्रभाव है जिससे हम सफलता का अर्जन कर सकते हैं। पहला V विनय - हमें विनम्र रहना चाहिए। विनय के भाव से हम सामने वाले व्यक्ति को भी प्रभावित कर सकते हैं। दूसरा V है विवेक - हर परिस्थिति

पर हमें विवेक रखना चाहिए। इस गुण से हम सही निर्णय लेने में सक्षम हो सकते हैं। तीसरा V है विद्या - विद्या हमारी बुद्धि को बढ़ाने वाली है। कार्यशाला में विद्यालय में अध्यापन कार्य करा रहे अध्यापक गणों के साथ तेरापंथ समाज से नवरतन डागा, अशोक जैन, वीरेंद्र डागा उपस्थित रहे।

पूज्य प्रवर द्वारा नवीन घोषणाएं

- पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण जी ने महती कृपा कर सन् 2027 में श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ अंचल की यात्रा करने और वर्ष 2027 की अक्षय तृतीया, वैशाख शुक्ला नवमी एवं दशमी के कार्यक्रम आयोजित करने की घोषणा करवाई।
- पूज्य गुरुदेव ने महती कृपा कर सन् 2030 का मर्यादा महोत्सव हांसी (हरियाणा) में करने की घोषणा की।
- युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने महती कृपा कर सन् 2031 की अक्षयतृतीया, वैशाख शुक्ला नवमी एवं दशमी के कार्यक्रम मालवा क्षेत्र में आयोजित करने की घोषणा करवाई।

तृतीय प्रेक्षाध्यान साधना शिविर का हुआ समापन

सिरियारी।

आचार्य श्री भिक्षु समाधि स्थल संस्थान सिरियारी में प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष के अन्तर्गत भिक्षु आराध्यम् में मुनि धर्मेशकुमारजी के मार्गदर्शन में तीसरे प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में देश के विभिन्न क्षेत्रों कर्नाटक, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, राजस्थान, गुजरात, बंगाल आदि से 26 शिविरार्थियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। शिविर में आसन, प्राणायाम एवं ध्यान के विविध प्रयोग करवाए गए।

मुनि धर्मेशकुमारजी ने अपने

अनुभवों के आधार पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि साधना का मुख्य लक्ष्य आत्मशांति की अनुभूति करना है। द्वन्द से निर्द्वन्द बनना है।

आप निरन्तर इस दिशा में गतिशील रहें। मुनि चैतन्यकुमारजी 'अमन' ने गीत का संगान करते हुए भावपूर्ण विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर संस्थान के उपाध्यक्ष उतमचंद सुखलेचा ने सभी शिविरार्थियों का प्रमाण पत्र एवं साहित्य प्रदान कर सम्मान किया।

संस्थान की ओर से व्यवस्थापक महावीर सिंह ने सभी का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन स्वस्तिक कुमार की देखरेख में हुआ।

जैन विद्या प्रमाण पत्र का वितरण

काजुपाड़ा, मुंबई।

इस वर्ष राकेश चौधरी, सरोज चौधरी और नीता सांखला ने 'विज्ञ' उपाधि प्राप्त की। इनका मोमेंटो और सर्टिफिकेट देकर सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन जैन विद्या केंद्र व्यवस्थापक

बबिता लोहा और सह केंद्र व्यवस्थापक मोनिका कोठारी ने कुशलता से किया। आयोजन में काजुपाड़ा तेयुप प्रभारी अमित रांका, युवक परिषद अध्यक्ष नरेश पगारिया, महिला मंडल अध्यक्ष अनिता पगारिया एवं उनकी टीम ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

संथारा समाचार

- जसोल निवासी श्रद्धानिष्ठ श्रावक रायचंद भंसाली सुपुत्र स्व. बालकचन्द जी भंसाली का दिनांक 16 दिसंबर 2024 सोमवार दोपहर 12:35 बजे चौविहार संथारापूर्वक देवलोकगमन हो गया।
- तारानगर निवासी उत्तर हावड़ा प्रवासी, मुखवी देवी दुगड़ (उम्र 94 वर्ष) धर्मपत्नी स्व. बच्छराज जी दुगड़ को परम पूज्य गुरुदेव की आज्ञा से दिनांक 15 दिसंबर 2024 को प्रातः 9:25 बजे उपासक रवि छाजेड़, उपासक झब्बर मल दुगड़ ने पारिवारिक जनों की सहमति से तिविहार संथारे का प्रत्याख्यान करवाया। संथारा 17 दिसम्बर 2024 को सायं लगभग 7:35 बजे संपन्न हो गया।

किशोर पीढ़ी में है देश, समाज और परिवार की आशा

रेलमगरा।

शतावधानी मुनि संजय कुमार जी के सान्निध्य में तथा मुनि प्रकाश कुमार जी के निर्देशन में बच्चों के लिए आंशिक जागरूकता शिविर का सफल आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। स्वागत भाषण सभा अध्यक्ष मुकेश मेहता ने दिया।

शिविर में मुख्य रूप से मोबाइल की लत और नशे जैसी बुरी आदतों से बचने का प्रशिक्षण दिया गया। मुनि प्रकाश कुमार जी ने अपने संबोधन में कहा कि

देश, समाज और परिवार की आशा और भविष्य किशोर पीढ़ी में है। लेकिन आज यह पीढ़ी मोबाइल और नशे के जाल में फंसकर अपनी पढ़ाई और संस्कारों से दूर हो रही है। उन्होंने कोमल हाथों में नशे की पुड़िया और मोबाइल गेम्स से हो रहे नुकसान को समाज के लिए बड़ा अपराध बताया।

मुनि श्री ने बच्चों को योग, प्राणायाम और कायोत्सर्ग का अभ्यास कराया। उन्होंने चैतन्य केंद्रों पर ध्यान केंद्रित करने की तकनीक सिखाई, जिससे बच्चों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

मुनि संजय कुमार जी और मुनि

प्रसन्न कुमार जी ने संस्कार निर्माण में प्रयासरत संस्थाओं को आह्वान किया कि वे बच्चों को भटकाव से बचाने के लिए विशेष प्रयत्न करें।

कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष मुकेश मेहता, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष अनिल टुकलिया, महिला मंडल से कैलाश देवी सोनी, संस्थाओं के पदाधिकारी एवं सदस्यों आदि की उपस्थिति रही। प्रशिक्षिका मीनाक्षी मेहता, श्रद्धा मेहता, प्रियंका ढीलीवाल और आनंद मेहता का सराहनीय योगदान रहा। अंत में सभा मंत्री रमेश ढालावत ने आभार व्यक्त किया।

प्रेक्षाध्यान चेतना के रूपान्तरण की प्रक्रिया है

साउथ कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तथा प्रेक्षा फाउन्डेशन के तत्वावधान में प्रथम विश्व ध्यान दिवस तेरापंथ भवन में समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा - जिस प्रकार शरीर में सिर का, वृक्ष में जड़ का मूल्य है उसी प्रकार आत्म-साधना में ध्यान का मूल्य है। मन, वचन, काया का स्थिरीकरण ही ध्यान है।

निर्विषय मन ही ध्यान है। ध्यान का अर्थ है- जागरूकता। हम कोई प्रवृत्ति

करे उसमें जागरूकता की परम अपेक्षा रहती है। जागरूकता हटी तो दुर्घटना घटी इसलिए हर प्रवृत्ति में जागरूकता जरूरी है।

ध्यान वर्तमान में जीने की प्रेरणा देता है। ध्यान स्वभाव परिवर्तन की प्रक्रिया है। ध्यान से अनेक शक्तियां, लब्धियां प्राप्त होती हैं। ध्यान कर्म निर्जरा का कारण है। ध्यान से व्यक्ति समाधि को प्राप्त होता है।

मुनिश्री ने आगे कहा- ध्यान की पृष्ठभूमि कायोत्सर्ग है। कायोत्सर्ग भेद विज्ञान की साधना है। भगवान महावीर ने ध्यान और तप के द्वारा केवल ज्ञान

को प्राप्त किया। ध्यान तीर्थ है, शक्ति है तप है। प्रेक्षाध्यान आचार्य श्री तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञजी के उर्वरा मस्तिष्क की देन है। उन्होंने प्रेक्षाध्यान का आयाम देकर तनाव से ग्रस्त लोगों को एक प्रकार की संजीवनी दी है। मुनिश्री ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कराए।

मुनि कुणाल कुमार जी ने गीत का संगान किया। प्रेक्षा प्रशिक्षिका रश्मि सुराणा ने प्रेक्षाध्यान के विषय में विचार व्यक्त किए। प्रेक्षा प्रशिक्षिकाओं ने प्रेक्षागीत से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। आभार वंदना डागा व संचालन सुनीता जैन ने किया।

समृद्ध राष्ट्र योजना संस्कारशाला का आयोजन

कांटाबांजी।

ABTMM के निर्देशन में इस प्रोजेक्ट के अंतर्गत स्थानीय M.E. स्कूल कांटाबांजी में आठवीं और अंतिम कार्यशाला सोशियल मीडिया का उपयोग का आयोजन किया गया। लगभग 200 बच्चों ने उपरोक्त कार्यक्रम में हिस्सा

लिया। स्कूल के सभी अध्यापक और अध्यापिकाओं ने भी कार्यक्रम में अपनी सहभागिता रखी।

नवकार महामंत्र के उच्चारण के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई।

महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करवाते हुए प्रेक्षाध्यान के भी कुछ प्रयोग भी बच्चों को करवाए गए। तत्पश्चात बच्चों के

मध्य ड्राइंग एवं क्विज क्विज क्विज का आयोजन गया।

सभी बच्चों को संकल्प करवाया गया कि वे कभी भी किसी भी प्रकार का नशा अपने जीवन में नहीं करेंगे। कभी किसी को गाली नहीं देंगे।

बड़ों का सम्मान करेंगे और अपने जीवन में अच्छी आदतों को अपनाएंगे।

पृष्ठ 1 का शेष

चित्त की एकाग्रता, निर्विचारता

ध्यान एक व्यापक और गहन प्रक्रिया है, जो चित्त की शुद्धि में सहायक है।

परम पूज्य आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने ध्यान के प्रयोग को शिविरों के माध्यम से नई ऊंचाई तक पहुंचाया। आज भी देश-विदेश के अनेक साधक प्रेक्षाध्यान शिविरों में भाग लेते हैं। हर क्रिया में

जागरूकता बनी रहनी चाहिए। ध्यान अर्थात् आदमी चलते हुए भी जागरूक रहे। बोलते हुए, बैठे हुए, भोजन करते हुए भी जागरूक और सजग रहे तो ध्यान की पुष्टता हो सकती है।

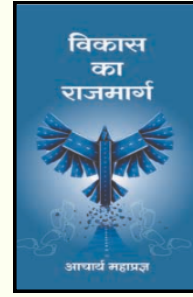
शरीर की अनावश्यक चंचलता से बचना चाहिए। प्रेक्षाध्यान में चित्त की एकाग्रता और स्थिरता बढ़ाने के लिए

कई प्रयोग किए जाते हैं। ध्यान अध्यात्म साधना का एक अनिवार्य अंग है। छोटे-छोटे ध्यान के प्रयोग भी जीवन में बड़ा परिवर्तन ला सकते हैं।

आचार्यप्रवर ने प्रवचन के मध्य उपस्थित जनता को कुछ देर तक ध्यान का प्रयोग भी कराया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

बोलती किताब

विकास का राजमार्ग



हर प्राणी एक यायावर है। वह यात्रा करता है। कभी मार्ग ऊबड़-खाबड़ होता है और कभी राजपथ। राजपथ पर चलना सुविधाजनक होता है। पगडंडियों पर चलना कष्टप्रद होता है। स्वाभाविक है कि राजपथ से चलने में जो सुविधा है, वह पगडंडी से चलने में नहीं होती।

आत्मा को और चेतना को समझना इतना आसान नहीं है। हमारे शरीर में उसकी चाबीया हैं, उसके स्विचबोर्ड हैं, संकेत हैं, किंतु जब तक साधना के द्वारा उन चाबियों को प्राप्त नहीं करते, उनके लगाने का तरिका नहीं सीखते तब तक चेतना और आत्मा के रहस्य अनावृत नहीं होंगे।

मनुष्य की दो प्रमुख शक्तियां प्राप्त हैं-सोचने की शक्ति और बोलने की शक्ति। बोलने की शक्ति प्रायः हर प्राणी को मिली हुई है। पशु-पक्षी भी बोलते हैं। दूसरे जीव-जंतु भी बोलते हैं। सबकी अपनी-अपनी भाषा है, किंतु सोचने और चिंतन करने की शक्ति कुछ-कुछ में होती है, सबमें नहीं होती।

धर्म के बारे आज भ्रांति की नहीं, क्रांति की जरूरत है। हमारा विचार क्रांति होना चाहिए कि मैं क्या कर रहा हूँ? आज पूजा-पाठ करें या नहीं, स्तुति-आराधना करें या नहीं, मंत्र-जाप करें या नहीं, मात्र संकल्पपूर्वक इतना करें कि मैं कषाय की तीव्रता को छोड़ दूंगा। कषाय को मंद करने का अभ्यास करूंगा उसको शांत करने का प्रयत्न करूंगा। अगर इतना-सा करते हैं तो मैं मानूंगा कि सचमुच आप धार्मिक आदमी हैं।



पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :

आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती

+91 87420 04849 / 04949 <https://books.jvbharati.org> books@jvbharati.org

संस्कार कार्यशाला का आयोजन

नवरंगपुर।

अभातेमम के निर्देशानुसार 'समृद्ध राष्ट्रीय योजना' के तहत सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय जावागुड़ा में अंतिम कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का मुख्य विषय था 'सत्य एवं ईमानदारी', 'पहले तोल फिर बोल', 'हेल्दी फूड हैबिट्स', और 'सोशल मीडिया का सही उपयोग'। कार्यक्रम की शुरुआत महाप्राण ध्वनि के साथ हुई। महिला वस्तु पर प्रकाश डाला। उन्होंने बच्चों को अपने जीवन में सदगुणों के विकास के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में बहन

गरिमा जैन ने बच्चों को कहा कि बोलने से पहले सोचें, क्योंकि हमारी बोली ही हमारे व्यक्तित्व का परिचय देती है। कार्यशाला में मंत्री रीना जैन ने बच्चों को स्वस्थ भोजन के महत्व पर जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जंक फूड, जैसे पिज्जा, बर्गर, समोसे, और पैकेट बंद खाद्य पदार्थ हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। स्कूल के 15 बच्चों ने विभिन्न विषयों पर हिंदी में भाषण दिया। स्कूल की प्रधानाध्यापिका प्रमोदा कुमारी दश ने महिला मंडल के इस प्रयास की प्रशंसा की। इस कार्यक्रम से बच्चों को जीवन उपयोगी शिक्षाएं मिलीं और ऐसी कार्यशालाओं का आयोजन भविष्य में भी होना चाहिए। कार्यक्रम के अंत में बॉबी जैन ने सभी का आभार व्यक्त किया।

बंधन मुक्ति के लिए करें अनासक्ति की साधना : आचार्यश्री महाश्रमण

हाथीपुरा।

16 दिसम्बर, 2024

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी, बड़ौदा से कच्छ की ओर चरण गतिमान करते हुए हाथीपुरा के उड़ान पब्लिक स्कूल में पधारे। अमृत देशना प्रदान करते हुए शांतिदूत ने फरमाया कि आदमी जीवन जीता है, और जीवन जीने के लिए पदार्थों का उपयोग करना पड़ता है। अनेक व्यक्तियों के साथ सामाजिक और पारिवारिक जीवन व्यतीत किया जाता है। जीवन जीने के लिए विभिन्न प्रवृत्तियों में संलग्न होना स्वाभाविक है। आचार्यश्री ने कहा कि इतने सारे कार्यों के बीच आत्मा को पवित्र बनाए रखने का एक उपाय है - अनासक्ति। जैसे कमल पानी में रहते हुए भी अलिप्त रहता है, वैसे ही संसार



में रहते हुए, पारिवारिक जीवन जीते हुए और व्यवसाय करते हुए भी निर्लिप्त रहने का प्रयास करना चाहिए। पूज्य प्रवर ने फरमाया कि पदार्थ के प्रति आसक्ति, स्वाद के प्रति आसक्ति भव बंधन का कारण बन सकती है। बन्धन से मुक्त रहने के लिए अनासक्ति की साधना

करने का प्रयास करना चाहिए।

आचार्यश्री ने फरमाया कि इच्छाएं आकाश के समान अनंत होती हैं, और 'बढ़िया से बढ़िया' की आकांक्षा ही आसक्ति का कारण बनती है। आसक्ति जितनी ज्यादा होती है तो आदमी पापाचरण भी कर लेता है। ज्यादा धन

की लालसा हो तो आदमी चोरी, धोखा, बेइमानी कर लेता है। पापाचार आदमी को दुर्गति की ओर ले जाने वाले हो सकते हैं। हमें श्रमशील बनकर जीवन जीना चाहिए। अवांछनीय सुविधाओं की आकांक्षा से बचना चाहिए। तपस्या और सादगी की भावना को जीवन का अंग बनाएं। साधारण कपड़ों में भी महान व्यक्तित्व हो सकता है। गृहस्थों का जीवन सादगीपूर्ण होना चाहिए। सुख-

सुविधाओं के पीछे न भागते हुए प्रभु की आराधना में मन लगाएं और दूसरों की आध्यात्मिक सेवा करने का संकल्प लें।

मंगल प्रवचन के उपरान्त आचार्य प्रवर ने श्रीगंगानगर व हनुमानगढ़ क्षेत्र में यात्रा करने की घोषणा करवाई। विद्यालय के प्रिंसिपल मनोज भाई ने आचार्यश्री के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

मोक्ष की दिशा में बढ़ने के लिए परमार्थ का जीवन जीएं : आचार्यश्री महाश्रमण

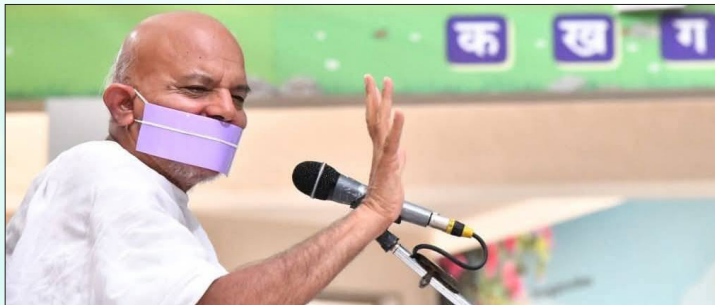
बोरसद।

17 दिसम्बर, 2024

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा देते हुए फरमाया कि इंसान जीवन जीता है, परंतु यह विचार करना आवश्यक है कि जीवन क्यों जीना चाहिए और जीवन कैसा जीना चाहिए? जीवन, चेतन और अचेतन—अथवा शरीर और आत्मा—दो तत्वों का योग है। इन दोनों के समिश्रण से ही जीवन संभव है। यदि केवल आत्मा है, तो मानव जीवन नहीं हो सकता और यदि केवल शरीर है, आत्मा के बिना, तो भी जीवन संभव नहीं।

आचार्यश्री ने कहा कि परमात्मा, मोक्ष में है, वहां शरीर नहीं होता, इसलिए वह मानव जीवन नहीं है। इसी प्रकार, यदि पार्थिव शरीर में आत्मा का अभाव हो, तो जीवन संभव नहीं। स्थूल शरीर और आत्मा का मिलन ही जीवन को परिभाषित करता है। उन्होंने समझाया कि इस शरीर को पूर्व जन्म के कर्मों के क्षय के लिए धारण किया गया है। जीवन का लक्ष्य होना चाहिए कि आत्मा को परमार्थ स्वरूप में परिणत किया जाए और मोक्ष की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त हो।

आचार्यश्री ने कहा कि जीवन को इस प्रकार जीना चाहिए कि आत्मा मोक्ष के निकट पहुंच सके। मोक्ष की दिशा में बढ़ने के लिए जीवन में अनेक पदार्थों की



आवश्यकता पड़ती है। गृहस्थ जीवन में धन अर्जन भी आवश्यक है, लेकिन इस प्रक्रिया में ईमानदारी और संयम का पालन होना चाहिए। धन जीवन के लिए है, परंतु जीवन धन के लिए नहीं होना चाहिए। धन कमाने में श्रावक धर्म का पालन करें। ईमानदारी से आजीविका अर्जित करें, अधिक हिंसा और पाप कर्मों से बचें। जीवन में सत्य, अहिंसा और पवित्रता का समावेश होना चाहिए। झूठ और चोरी से बचना चाहिए। मांसाहार से दूर रहें और अहिंसा को अधिकतम स्थान दें। गुस्सा और अहंकार से बचें, शांति और सादगी के साथ जीवन जीएं। नशीली वस्तुओं का सेवन न करें। अशोभनीय कार्यों से बचें और संयमपूर्ण जीवन अपनाएं। पूज्य प्रवर ने फरमाया - 'अभातेयुप के तत्वावधान में चलने वाली जैन संस्कार विधि के माध्यम से जीवन में सादगी और संस्कृति का समावेश करें।' जीवन में धर्म की साधना भी होनी चाहिए। जप, ध्यान, स्वाध्याय, और सामायिक जीवन का हिस्सा बनें।

साधु-साधवियों की सेवा से मोक्ष की ओर प्रगति हो सकती है। जीवन में उठने-बैठने और बोलने का तरीका भी आदर्श होना चाहिए। आचार्यश्री ने बाल पीढ़ी के उत्थान के लिए ज्ञानशालाओं की प्रशंसा की। आचार्य प्रवर ने कहा कि ज्ञानशालाएं बच्चों को धार्मिक संस्कार और ज्ञान प्रदान करने का उत्तम कार्य कर रही हैं। इन संस्कारों से बाल पीढ़ी का जीवन श्रेष्ठ बनता है।

मालवा क्षेत्र की जनता विशाल संख्या में श्रीचरणों में अपनी अर्ज के साथ उपस्थित थी। मंगल प्रवचन के उपरान्त मालवा सभा के सदस्यों ने गीत का संगान किया। तेरापंथी सभा, मालवा के अध्यक्ष संजय गांधी ने अपने उद्गार व्यक्त किये। बोरसद से प्रकाशचंद श्रीमाल, मंजुला श्रीमाल, वंदना श्रीमाल, स्थानवासी समाज के राजूभाई, स्वरा श्रीमाल, सरस्वती शिशु कुंज विद्यालय के चेरमेन संजय पटेल ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। मधु श्रीमाल, आनंद-बोरसद महिला मण्डल ने पृथक्-पृथक् गीत का संगान किया।

लक्ष्य कार्यशाला का आयोजन



छापर।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल छापर के तत्वावधान में लक्ष्य कार्यशाला का आयोजन कालू कल्याण केन्द्र में हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि डॉ. विनोद कुमार जी के उद्बोधन से हुआ। मंडल की बहनों ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। तत्पश्चात स्थानीय अध्यक्ष मंजू दुधोडिया ने राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं टीम का स्वागत करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। मंजू दुधोडिया ने बताया छापर महिला मंडल हमेशा से ही जागरूक मंडल रहा है। गोपालपुरा सरपंच सविता राठी अपने वक्तव्य में कहा कि जीवन में हर महिला को आगे बढ़ना चाहिए, बिना लक्ष्य निर्धारित किए हम अपने सपने पूरे नहीं कर सकते। सपना बैद ने स्वरचित गीतिका से राष्ट्रीय अध्यक्ष का स्वागत किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की पूर्व अध्यक्ष पुष्पा बैद ने सबसे पहले आचार्य कालुगणी को नमन करते हुए बहनों से कहा- हमें अपने जीवन का लक्ष्य खुद को बनाना है और सफलता हासिल करनी है। हमें जीवन में मेहनत अवश्य करते रहना चाहिए, हमारे संगठन को मजबूत बनाना चाहिए, जिससे हमारी एकता बनी रहे। हर इंसान में अलग-अलग गुणवत्ता होती है उसको उपयोग करना चाहिए। हमें

बुजुर्गों का सम्मान करना चाहिए। हमारे बुजुर्ग माता-पिता छत की तरह होते हैं, जो आंधी, तूफान, बारिश से हमारी रक्षा करते हैं, उनको हमेशा सम्मान देना चाहिए। राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा ने अपने वक्तव्य के साथ बहनों को प्रेरणा देते हुए कहा- यह कालुगणी की जन्मभूमि है, इस धरा से हर महिला को अपने व्यक्तित्व में निखार लाकर मंडल को सशक्त - सुदृढ़ बनाना है। सभी बहनों को तत्वज्ञान, तेरापंथ दर्शन, जैन स्कूलर से ज्यादा से ज्यादा जुड़ना है। आप जिस लक्ष्य के साथ आगे बढ़ना चाहते हैं उसके लिए समय देना होगा, कड़ी मेहनत और जुनून से कार्य करेंगे तभी सफलता हासिल होगी।

आप संकल्प करें कि 2025 में कालू जन्म धरा पर तत्वज्ञान का सेंटर बनाएं। थली संभाग प्रभारी राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य अलका बैद ने अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की स्थाई गतिविधियों की जानकारी दी। ज्ञानशाला प्रभारी ज्योति दुधोडिया, शांति दुधोडिया ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम को सफल बनाने में उपाध्यक्ष सरोज भंसाली, पूर्व अध्यक्ष प्रेम नाहटा, शोभा डोसी, कन्या मंडल प्रभारी सरोज दुधोडिया एवं अनेक पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं का सहयोग रहा। कार्यक्रम का कुशल संचालन छापर की पूर्व अध्यक्ष सरिता सुराणा ने किया। धन्यवाद ज्ञापन मंत्री हेमलता दुधोडिया ने किया।

परार्थ के लिए पुरुषार्थ करने वाला होता है कार्यकर्ता : आचार्यश्री महाश्रमण

स्वामीनारायण संप्रदाय की उद्गम स्थली बोचासन में हुआ तेरापंथ नायक का अभिनंदन

बोचासन।

18 दिसम्बर, 2024

तेरापंथ के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमणजी बोरसद से लगभग 12 किमी का विहार कर अपनी धवल सेना के साथ बोचासन स्थित स्वामीनारायण मंदिर परिसर में पधारे। बोचासनवासी अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण संस्था (बी.ए.पी.एस.) के उद्गमस्थली पर स्वामी नारायण संप्रदाय के संतों ने पूज्य प्रवर का अभिनंदन किया।

संस्था परिसर में आयोजित कार्यक्रम में मंगल पाथेय प्रदान करते हुए परम पावन ने कहा कि हमारे जीवन में एक स्थायी तत्व है - आत्मा। आत्मा एक जन्म के बाद दूसरा जन्म ग्रहण करती रहती है, जब तक वह मोक्ष प्राप्त नहीं कर लेती।

आत्मा के साथ शरीर भी है और शरीर के साथ वाणी, मन और कल्पना करने की शक्ति भी होती है। हम मन से सोचते हैं, अप्रशस्त चिंतन से व्यक्ति दुःखी बन सकता है और प्रशस्त चिंतन से व्यक्ति सुखी बन सकता है। मन ही बंधन और मुक्ति का कारण भी बन



सकता है। आदमी को अच्छा देखने, अच्छा सुनने, अच्छा सोचने अच्छा बोलने और अच्छा कार्य करने का प्रयास करना चाहिए। आदमी अपने जीवन में बुरे से बचाव और अच्छे से लगाव रखने का प्रयास करना चाहिए। मनुष्य के भीतर संस्कार भी होते हैं, जो अच्छे या बुरे हो सकते हैं। हम असद् संस्कारों को दूर करने का और अच्छे संस्कारों को पुष्ट करने का प्रयास करें।

आचार्यप्रवर ने जैन धर्म, तेरापंथ धर्मसंघ, तेरापंथ नामकरण और पूर्वाचार्यों के विषय में जानकारी देते हुए साध्विचार के नियमों एवं सद्भावना, नैतिकता और नशा मुक्ति के लक्ष्य के साथ की जा रही यात्रा का वर्णन किया। उपस्थित कार्यकर्ताओं को प्रेरणा प्रदान करते हुए पूज्य प्रवर ने फ़रमाया कि कार्यकर्ता को अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों में समभाव रखना चाहिए।

'कार्यकर्ता' को परिभाषित करते हुए पूज्यश्री ने कहा कि सुख-दुःख को गौण कर, परार्थ के लिए पुरुषार्थ करने वाला कार्यकर्ता होता है। कार्यकर्ता को आध्यात्मिक-धार्मिक कार्य, दूसरों का कल्याण और समर्पण की भावना से ओत-प्रोत होना चाहिए।

इस सन्दर्भ में पूज्य प्रवर ने निम्न दोहा सुनाया -

"सरवर, तरवर, संत जन चोथो

बरसे मेह।

परमारथ के कारणै, च्यारू धारी देह।।"

आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया था। अणुव्रत के नियमों को जैन या अजैन, कोई भी स्वीकार कर सकता है। व्यक्ति अच्छा इंसान बने, गुडमैन बने, क्रोध न करे, क्षमाशीलता का भाव रखे।

आचार्य प्रवर ने आगे कहा - आज प्रमुख स्वामीजी के यहाँ आना हुआ है। आचार्यश्री महाश्रमणजी और प्रमुख स्वामीजी के साथ दिल्ली में कार्यक्रम हुआ था। आप सभी संतों से मिलना हुआ, महंतस्वामीजी के प्रति भी हमारी आध्यात्मिक मंगलकामना है। हम सभी धर्म का प्रचार करते रहें।

बी.ए.पी.एस. की ओर से वेदक स्वामीजी ने आचार्यश्री को एवं तेरापंथ समाज की ओर से आचार्य महाश्रमण चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति सूरत के अध्यक्ष संजय सुराणा आदि ने वेदक स्वामीजी को साहित्य उपहृत किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी एवं बी.ए.पी.एस. संस्था के स्वामीजी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

